सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए 'केंद्रित' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण
सह्याद्री पर्वत श्रंखला

पुणे अंचल की तिमाही गृहपत्रिका - अंक जून 2021

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यालयों, शाखाओं एवं स्टॉफ सदस्यों के बीच केवल निजी वितरण हेतु

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए 'केंद्रित' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

सेंट-सह्याद्री

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

संरक्षक
श्री बी.बी.मुटरेजा
फील्ड महाप्रबंधक

मार्गदर्शन
श्री संदिप्त कुमार पटेल, उप-महाप्रबंधक
श्री स्वदेश चंद्र, सहायक महाप्रबंधक
श्री व्ही व्ही देशमुख, सहायक महाप्रबंधक
श्री सुरेश सालियन, सहायक महाप्रबंधक

परामर्शदाता
मुख्य आंतरिक लेखा परीक्षक
क्षेत्रीय प्रबंधक, अकोला
क्षेत्रीय प्रबंधक, अमरावती
क्षेत्रीय प्रबंधक, औरंगाबाद
क्षेत्रीय प्रबंधक, अहमदनगर
क्षेत्रीय प्रबंधक, जलगांव
क्षेत्रीय प्रबंधक, नागपुर
क्षेत्रीय प्रबंधक, नासिक
क्षेत्रीय प्रबंधक, पुणे
क्षेत्रीय प्रबंधक, सोलापुर

संपादक
श्री राजीव तिवारी,
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

संपर्क
राजभाषा विभाग
आंचलिक कार्यालय, पुणे
cmhindipunezo@centralbank.co.in
संपर्क – 84088-88775 / 77679-71351

अनुक्रमणिका

क्रम	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	एफ.जी.एम. महोदय का संदेश	3
2	डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान	5
3	एन॰ पी॰ ए॰ वसूली में ऋण दस्तावेजों का योगदान	8
4	बैंकों में बढ़ता एनपीए - कारण एवं निवारण	10
5	ब्लॉकचेन तकनीक	13
6	डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्रणाली की भूमिका और उसमें भारतीय भाषाओं का महत्व	16
7	विविध कविताएं	19
8	आखिरी पड़ाव	20
9	सेन्ट्रल बैंक की बेहतर सेवा – कविता	21
10	*खुशवंत सिंह* द्वारा वर्णित ज़िंदगी के दस सूत्र	22
11	स्टेचू ऑफ़ यूनिटी	23
12	गुलदस्ता –कविता	24
13	थेट पंकज कोटलवारच्या लेखणीतुन – 'करोडपती मेंदुचं रहस्य'	25
14	विश्व पर्यावरण	28
15	अंतराष्ट्रीय महिला दिवस – आलेख	31
16	नकदी-रहित अर्थव्यवस्था	32
17	आज का ग्रामीण जनजीवन और परिवेश	34
18	मेरे जीवन की सीख (एक संस्मरण)	36
19	मेरा स्कूल – एक कविता	37
20	राजभाषा विविध कार्यक्रम	38
21	राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम 2021-22	39

खंडन –
इस गृहपत्रिका में सम्मिलित किए गए लेखों में व्यक्त विचार आलेखकों/रचनाकर्ताओं के निजी हैं. इनका बैंक से कोई सरोकार नही है.

पुणे अंचल की तिमाही गृहपत्रिका - अंक जून 2021
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के कार्यालयों, शाखाओं एवं स्टॉफ सदस्यों के बीच केवल निजी वितरण हेतु

पुणे अंचल के फील्ड महाप्रबंधक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

मैनें दिनांक 05.07.2021 को पुणे अंचल में फील्ड महाप्रबंधक के रूप में कार्य ग्रहण किया है. मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे आप सभी के साथ कार्य करने का अवसर मिला है. पुणे अंचल में रीटेल, कृषि, एमएसएमई (RAM) और निर्यात के क्षेत्र में व्यापार की प्रचुर संभावनाएं उपलब्ध हैं जिन्हें हमें हर हाल में प्राप्त करना है.

मैं प्राथमिकता के आधार पर ध्यान देने योग्य कुछ पहलुओं पर जोर देना चाहूंगा, ताकि हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में लगने वाले समय को कम कर सकें :

- एसएमए शून्य स्तर से सभी एसएमए खातों का अनुवर्तन (फॉलो-अप),
- गैर निष्पादित आस्तियों (एनपीए) में कमी लाना,
- ऋण-जमा अनुपात (CD ratio) 60% प्राप्त करने हेतु रीटेल, कृषि, एमएसएमई के अंतर्गत नए ऋण देना,
- विद्यमान और नए ग्राहकों तथा स्टॉफ सदस्यों से नियमित संपर्क कर उनकी समस्याओं का समाधान करना,
- शिविरों के आयोजन द्वारा कासा के अंतर्गत नए खाते खोलना,

आइए, सामूहिक रूप से कार्य करते हुए हम अपनी महान संस्था की प्रतिष्ठा को ऊंचाइयों तक ले जाएं.

'विजेता कोई अलग कार्य नही करते हैं, बल्कि वे उसी कार्य को अलग तरीके से करते हैं'

बी.बी.मुटरेजा
फील्ड महाप्रबंधक

संपादकीय

पुणे अंचल में कार्यरत् सभी सेंट्रलाईट साथियों,

एक बार पुन: आप सभी सुधि और सहृदय पाठकों का यथायोग्य अभिवादन

साथियों, आंचलिक कार्यालय पुणे की त्रैमासिक ई-पत्रिका 'सेन्ट-सह्याद्रि' के अप्रैल-जून 2021 तिमाही का अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है. यह ज्ञातव्य है कि दिनांक 21.06.2021 को हमने **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2021** सादगीपूर्ण रीति से अंचल के कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए, जो कि अच्छे एवं स्वस्थ्य जीवन के लिए आवश्यक है. योग एक कला है जो हमारे शरीर, मन और आत्मा को एक साथ जोड़ता है और हमें मजबूत और शांतिपूर्ण बनाता है. योग आवश्यक है क्योंकि यह हमें फिट रखता है, तनाव को कम करने में मदद करता है और समग्र स्वास्थ्य को बनाए रखता है और एक स्वस्थ मन ही अच्छी तरह से ध्यान केंद्रित करने में सहायता कर सकता है. योग आंतरिक शांति प्राप्त करने और तनाव तथा अन्य समस्याओं के खिलाफ लड़ाई में मदद करता है. योग एक व्यक्ति में शांति के स्तर को बढ़ाता है और उसके आत्मविश्वास को और अधिक बढ़ाने तथा उसे खुश रहने में मदद करता है. एक स्वस्थ व्यक्ति एक अस्वस्थ व्यक्ति की तुलना में अधिक काम कर सकता है. आजकल जीवन बहुत तनावपूर्ण है और हमारे आसपास बहुत प्रदूषण है. यह कई स्वास्थ्य समस्याओं का कारण है. सिर्फ 10-20 मिनट का योग हर दिन आपके स्वास्थ्य को अच्छा रखने में मदद कर सकता है. बेहतर स्वास्थ्य का मतलब बेहतर जीवन है.

साथियों, इस अंक में हमने आपकी रूचियों और अभिलाषाओं को ध्यान में रखते हुए समयानुरूप प्रासंगिक विषयों को शामिल किया है. प्रस्तुत आलेखों की रचना और संकलन हमारे अंचल के कार्मिकों द्वारा किया गया है. हमारी अपेक्षा है कि उक्त आलेख आपके पठन-बुभुक्षा को संतुष्ट करने में सफल होगें. आपसे अनुरोध है कि आप अपने मंतव्य से हमें अवश्य अवगत कराएं जिससे हमारी गृह पत्रिका विकास के पथ पर सतत् अग्रसर होती रहे.

हमें आपकी रचनात्मक प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी.

राजीव तिवारी
मुख्य प्रबंधक- राजभाषा

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर – एक राष्ट्र निर्माता

(130वीं जन्म जयंती के अवसर पर प्राप्त आलेख)

परिचय

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जो उस समय सभी प्रकार के सामाजिक, शैक्षिक, धार्मिक व राजनीतिक अधिकारों से वंचित था. इसके बावजूद भी बाबा साहेब की गिनती दुनिया के सबसे अधिक शिक्षित लोगों में की जाती है. बाबा साहेब के पास अमेरिका, इंग्लैण्ड तथा जर्मनी की उच्च डिग्रियां थीं तथा इंग्लैण्ड से वकालत पास कर स्वतंत्र रूप से बम्बई में वकालत शुरू कर दी. डॉ. अम्बेडकर ने दलितों को "शिक्षित हो, संघर्ष करो और संगठित हो" का नारा देकर मुक्ति का रास्ता दिखाया. उनका शिक्षा प्रचार का कार्यक्रम केवल दलितों तक ही सीमित नहीं था बल्कि उन्होंने सभी वर्गों के लिए उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने का प्रयास किया. डॉ. आंबेडकर ने "पीपल्ज़ एजुकेशन सोसायटी" के माध्यम से मुम्बई में कालेज स्थापित किये जिनमें बिना किसी भेदभाव के सभी को शिक्षा उपलब्ध करायी और जनसाधारण की समस्यायों को सामने रख कर उनमें प्रातः तथा सायंकाल पढ़ाई की व्यवस्था की.

बाबा साहेब ने राष्ट्र के निर्माण एवं भारतीय समाज के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया जिन्हें निम्नानुसार उल्लेखित किया जा रहा है:

1. **स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण**

   यह सर्वविदित है कि स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माण में बाबा साहेब का महत्वपूर्ण योगदान है. इस से कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि आज भारत में यदि लोकतंत्र जीवित है तो वह इस संविधान के कारण ही है. भारत में संसदीय लोकतंत्र और सरकारी समाजवाद की स्थापना में बाबा साहेब का अद्वितीय योगदान है.

2. **राजनीतिक सत्ता में आम-जन की हिस्सेदारी**

   भारत सरकार अधिनियम 1935 लागू होने पर प्रान्तों में विधान सभाएं स्थापित करने एवं स्वराज की पद्धति लागू करने का निर्णय लिया गया तो बाबा साहेब ने राजनीतिक क्षेत्र में दलितों की हिस्सेदारी करने के ध्येय से स्वतंत्र मजदूर पार्टी की स्थापना की तथा उसके झंडे तले 1937 का पहला चुनाव लड़ा. इसमें उन्हें बहुत अच्छी सफलता मिली. इस पार्टी में दलितों के हितों के साथ साथ मजदूर हितों की वकालत भी की गयी थी तथा कई प्रस्ताव रखे गए थे. बाबा साहेब चाहते थे कि मजदूरों को केवल बेहतर कार्य स्थिति से ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए बल्कि उन्हें राजनीति में भाग लेकर राजनीतिक सत्ता में हिस्सेदारी प्राप्त करनी चाहिए.

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान.........जारी

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान..........जारी

3. **श्रमिक कानून संबंधी कार्य**

सन 1942 में जब बाबा साहेब वायसराय की कार्यकारिणी समिति के सदस्य बने थे तो उन के पास श्रम विभाग था जिस में श्रम, श्रम कानून, कोयले की खदानें, प्रकाशन एवं लोक निर्माण विभाग थे. श्रम मंत्री के रूप में उन्होंने मजदूरों के कल्याण के लिए बहुत से कानून बनाये जिन में प्रमुख इंडियन ट्रेड यूनियन एक्ट, औद्योगिक विवाद अधिनियम, मुआवज़ा, काम के घंटे तथा प्रसूति लाभ आदि प्रमुख हैं. वर्तमान में जितने भी श्रम कानून हैं उनमें से अधिकतर बाबा साहेब के ही बनाये हुए हैं जिस के भारत का मजदूर वर्ग उनका सदैव ऋणी रहेगा.

4. **बिजली उत्पादन योजनाएं**

बाबा साहेब यह भी जानते थे कि बिजली के बिना औद्योगीकरण संभव नहीं है. उनका विचार था कि हमें सस्ती बिजली बनानी चाहिए. बाबा साहेब नदियों पर बांध बना कर बिजली पैदा करना चाहते थे. इसी उद्देश्य से उन्होंने दामोदर घाटी योजना, सेंट्रल वाटरवेज़, इर्रीगेशन एंड नेवीगेशन कमीशन की स्थापना की. कालांतर में कई बड़ी बहुउद्देशीय नदी योजनायें बनायीं गयीं जिनसे बिजली के उत्पादन के साथ साथ कृषि सिंचाई एवं बाढ़ नियंतरण में सहायता मिली.

5. **कृषि भूमि का राष्ट्रीयकरण**

बाबा साहेब भारत की बढ़ती आबादी के कारण उपजी गरीबी, बेरोज़गारी, भुखमरी आदि समस्यायों के बारे में बहुत चिंतित थे. अतः वे खेती को अधिक उन्नत करना चाहते थे. वास्तव में वे इसे उद्योग का दर्जा देना चाहते थे. अतः उन्होंने सम्पूर्ण कृषि भूमि का राष्ट्रीयकरण करके रूस की भांति सामूहिक खेती का प्रस्ताव रखा ताकि कृषि का मशीनीकरण हो सके.

6. **नदी सिंचाई योजना**

बाबा साहेब ने नदियों पर बाँध बना कर उनसे नहरें निकलने तथा बिजली पैदा करने की योजनायें बनायीं थीं. इस प्रकार वे नदियों की बाढ़ से होने वाली तबाही को खुशहाली के साधन बनाना चाहते थे. इसी उद्देश्य से उन्होंने भारत में सर्वप्रथम "दामोदर नदी घाटी" की योजना बनायी जो अमेरिका की "टेनिस वेली अथारिटी" की तरह की थी. इसी प्रकार उन्होंने भारत की अन्य नदियों के जल का उपयोग करने की योजनायें भी बनायीं.

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान..........जारी

डॉ. बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर का राष्ट्र निर्माण में योगदान.........जारी

7. **नदी यातायात योजनाएं**

बाबा साहेब नदी यातायात को भी बहुत बढ़ावा देना चाहते थे क्योंकि यह काफी सस्ता है. इसी उद्देश्य से उन्होंने सेंट्रल वाटरवेज़, इर्रीगेशन एंड नेवीगेशन कमीशन (CWINC)की स्थापना भी की थी. वर्तमान मोदी सरकार इसी का अनुसरण कर रही है. बाबा साहेब नदियों में मिटटी भराव के कारण आने वाली बाढ़ को रोकने हेतु अधिक गहरा करने के लिए छोटी एटमी शक्ति का प्रयोग करने के भी पक्षधर थे. इस से हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि कृषि, सिंचाई तथा नदी जल के सदुपयोग के बारे में बाबा साहेब की सोच कितनी आधुनिक एवं प्रगतिशील थी.

8. **परिवार नियोजन योजना**

बाबा साहेब जानते थे कि भारत की निरंतर बढ़ती आबादी राष्ट्र के पिछ्ड़ेपन का कारण है. इसी लिए उन्होंने 1940 में बम्बई एसेम्बली में परिवार नियोजन योजना लागू करने का बिल प्रस्तुत किया था.

9. **दलित नवयुवकों में अनुशासन**

बाबा साहेब ने स्वयं सेवक संघ की तरज पर दलित नवयुवकों का "समता सैनिक दल' बनाया. सन 1942 में उन्होंने इस का बड़ा सम्मलेन भी किया. बाबा साहेब इस के माध्यम से दलित नवयुवकों में अनुशासन, आत्म रक्षा एवं अपने नेताओं की रक्षा करने तथा अत्याचार का विरोध करने की भावना पैदा करना चाहते थे.

10. **शराब बंदी लागू करना**

महिलायों को अपनी मुक्ति और अधिकारों के लिए बाबा साहेब ने अथक योगदान दिया. उन्होंने महिलायों को शराब बंदी लागू करने के लिए संघर्ष करने के लिए भी प्रेरित किया. उन्होंने महिलायों को सलाह दी कि यदि उनका पति शराब पीकर घर आये तो वे उसे खाना न दें. इस से बाबा साहेब की महिलायों की मुक्ति सम्बन्धी चिंता का आभास मिलता है.

11. **हिन्दू नारी का उत्थान**

बाबा साहेब महिलायों के शुद्र होने की स्थिति के कारण व्याप्त दुर्दशा एवं अधोगति से बहुत दुखी थे. अतः वे महिलायों को भी कानूनी अधिकार दिलाना चाहते थे.1952 में जब वे भारत के कानून मंत्री बने तो उन्होंने अथक परिश्रम करके हिन्दू कोड बिल तैयार किया और उसे पास करने हेतु संसद में पेश किया. यही बिल हिन्दू विवाह एक्ट, हिन्दू उतराधिकार एक्ट, हिन्दु स्पेशल मैरेज एक्ट आदि के रूप में 1956 में पास हुआ. इससे स्पष्ट है कि भारतीय, खास करके हिन्दू नारी के उत्थान में डॉ. आंबेडकर का महान योगदान है.

12. **अन्य सामाजिक एवं आर्थिक योजनाएं**

मजदूर वर्ग का कल्याण, बाढ़ नियंत्रण, बिजली उत्पादन, कृषि सिंचाई एवं जल यातायात सम्बंधी योजनाएं तैयार करना था. इसके फलस्वरूप ही बाद में भारत में औद्योगीकरण एवं बहुउद्देशीय नदी जल योजनायें बन सकीं.

उपरोक्त संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि बाबा साहेब ने भारत के औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण में जो महान योगदान दिया है उस के लिए भारत उनका हमेशा ऋणी रहेगा.

एन॰ पी॰ ए॰ वसूली में ऋण दस्तावेजों का योगदान

हम जब भी कोई ऋण स्वीकृत करते हैं तो ऋण वितरण के पहले अपने ग्राहक से ऋण दस्तावेज़ प्राप्त करते हैं. दस्तावेजों की जरुरत मुख्यतया निम्न कारणों से पड़ती है :

1	2	3	4
ऋणी के पहचान के लिये	ऋण के उद्देश्य के लिये	ऋण के नियम एवं शर्तो के लिये	प्रतिभूति के पहचान के लिये

ऋण के लिये दस्ताबेज प्राप्त करते समय कौन-कौन से दस्तावेज़ लेने हैं यह निम्न बातों पर निर्भर करता है :

1. ऋणी के अनुसार जैसे ऋणी व्यक्तिगत है, संयुक्त खाता है, फर्म है, कम्पनी है, संयुक्त हिन्दू परिवार है आदि.
2. ऋण के उद्देश्य के अनुसार जैसे मियादी ऋण, नकद साख, ओवरड्राफ्ट इत्यादि.
3. ऋण के प्रतिभूति के अनुसार जैसे फ़िक्स्ड डिपॉज़िट, एन.एस.सी, जीवन बीमा पॉलिसी, चल संपत्ति, अचल संपत्ति, बुक डेब्ट्स, वाहन, उपभोक्ता सामान इत्यादि.

जब कोई ऋण खाता गैर निष्पादक हो जाता है और हमें ऋण के वसूली के लिये न्यायालय मे दावा करना होता है तो उस समय मुख्यतः ऋण दस्तावेजों के आधार पर ही दावों का निपटारा होता है. ऐसी स्थिति मे यह आवश्यक होता है कि ऋण देते समय यह ध्यान रखा जाए कि किस ऋण के लिये कौन-कौन से दस्तावेज़ प्राप्त करने हैं. दस्तावेज़ प्राप्त करते समय उपर्युक्त बिंदुओं पर यदि ध्यान रखा जाय तो हम सही दस्तावेज़ प्राप्त कर सकते हैं. इसके बाद दस्तावेज़ के निष्पादन के समय निम्न बिन्दुओं पर भी ध्यान रखा जाना चाहिए:

1. दस्तावेजों का निष्पादन या हस्ताक्षर
2. उचित स्टाम्प शुल्क का भुगतान
3. नियमानुसार दस्तावेजों का निबंधन जहां भी आवश्यक हो और दस्तावेजों का उचित रख-रखाव तथा उनकी एंफ़ोर्सेबिलिटी (परिसीमा अधिनियम के अनुसार) एवं जहां कहीं भी आवश्यक हो दस्तावेजों पर गवाही या अभिप्रमाणन

4. यदि विभिन्न ऋणियों द्वारा अलग-अलग तिथियों में दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किया जाता है तो जिस तिथि को अंतिम हस्ताक्षरकर्ता हस्ताक्षर करता है और यदि सभी ऋणी सहमत हैं तो वही तिथि दस्तावेज़ की तिथि मानी जाएगी.

5. यदि न्यायालय के क्षेत्राधिकार का विवाद हो तो दस्तावेजों के निष्पादन के स्थान के आधार पर ही यह तय किया जाता है कि विवाद किस न्यायालय के क्षेत्राधिकार मे आएगा. साथ ही दस्तावेजों पर लगने वाले स्टाम्प शुल्क का निर्धारण भी दस्तावेजों के निष्पादन के स्थान पर निर्भर करता है.

6. दस्तावेज़ निष्पादन करने वाले सभी पक्षों का हस्ताक्षर दस्तावेज़ के सभी पेजों पर सबसे नीचे होने चाहिये. हलांकि कानूनी बाध्यता के लिये अंतिम पेज पर किए गए हस्ताक्षर भी मान्य हैं. दस्तावेजों पर किए गए कटिंग, इरेजिंग, ओवरराइटिंग आदि समुचित रूप से अधिप्रमाणित होने चाहिये. यदि कोई व्यक्ति बाएँ हाथ से हस्ताक्षर करता है तो इस बात का उल्लेख हस्ताक्षर के नीचे होना चाहिये.

   यदि दस्तावेजों पर हस्ताक्षर स्थानीय भाषा में है तो ऋणी से यह प्रमाणपत्र लेना चाहिये कि दस्तावेजों मे वर्णित तथ्यों को उन्हें समझा दिया गया है. यदि हस्ताक्षर करने वाला निरक्षर है तो विहित रूप से इस बात की गवाही लेकर दस्तावेजों के साथ प्रमाणपत्र रखना चाहिये कि दस्तावेजों के तथ्य उन्हे पढ़ कर समझा दिया गया है.

7. अवयस्क, दिवालिया, विक्षिप्त या पागल व्यक्ति, अत्यधिक नशे के हालत का व्यक्ति नियमानुसार करार के लिये पात्र नहीं होते हैं इसलिए ऐसे व्यक्ति द्वारा निष्पादित दस्तावेज़ वैध नहीं होते हैं.

यदि उपर्युक्त तथ्यों का ध्यान रखा जाता है तो ऋण खातों के गैर- निष्पादक होने की स्थिति मे जब हम न्यायालय मे दावा दायर करेंगे तो फैसला बैंक के पक्ष मे होने की संभावना ज्यादा रहेगी जिससे हमें वसूली मे सहायता मिलेगी.

बैंकों में बढ़ता एनपीए - कारण एवं निवारण

भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ बने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इन दिनों गैर निष्पादित संपत्तियों यानी एनपीए की समस्या झेल रहे है. एनपीए एक ऐसा मुद्दा है जिसे बार-बार उठाया जाता रहा है और बैंकों के लिए सिर दर्द बना हुआ है और इसके बारे में हर बार जब भी अर्थव्यवस्था की बात होती है तो कुछ न कुछ ठोस कदम उठाने की बात होती है तो आइये जानते है की यह एनपीए क्या है ? क्या है इसके कारण ? और कैसे करे इसका निवारण ?

असल में एनपीए को नॉन परफोरमिंग असेट या अनर्जक अस्ति भी कहा जाता है और अगर साधारण भाषा में बात करें तो यह ऐसी संपत्ति होती है जिसका देश की अर्थव्यवस्था में कोई योगदान नहीं होता है. अनर्जक अस्ति में से तात्पर्य बैंकिंग व वित्त उद्योग में ऐसे ऋण से है, जिसका लौटना संदिग्ध हो.

बैंक अपने ग्राहकों को जो ऋण प्रदान करता है, उसे अपने खाते में अस्ति के रूप में दर्शाता है. यदि किसी कारण वश यह आशंका हो कि ग्राहक यह ऋण लौटा नहीं पाएगा तो ऐसे ऋण को अनर्जक अस्ति कहा जाता है. किसी भी बैंक के सेहत (आर्थिक सेहत) को मापने के लिए यह एक महत्वपूर्ण पैमाना है तथा इसमें वृद्धि होना किसी बैंक कि सेहत के लिए चिंता का विषय ही होता है.

संपत्ति कि गुणवत्ता के मुताबिक एनपीए को तीन भागों में विभाजित किया गया है. मसलन,

1. मानक पर खरी न उतरनेवाली अस्तियां
2. संदिग्ध आस्तियां और
3. डूब जानेवाली अस्तियां (लॉस)
4. कोई खाता एनपीए न हो, इसके लिए बैंकों में स्पेशल मेंशन अकाउंट (एसएमए) का प्रावधान किया गया है. ताकि समयानुसार सतर्कता बरती जाए व संभावित एनपीए खातो को एनपीए में तब्दील होने से बचाया जा सके.

यह सच तो सबको पता है जिसपर सार्वजनिक रूप से मुश्किल ही बात होती है. वह यह कि भारतीय वित्तीय तंत्र बैंकों पर आश्रित है. वह यह कि भारतीय बैंकों, विशेष रूप से यह सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) द्वारा संचालित होती है. दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि आर्थिक चिंतक और नीति निर्धारक इन पीएसबीको भारतीय अर्थव्यवस्था की अमूल्य निधि मानने के बजाय एक समस्या के तौर पर देखते है.

आईए, संभव बनाएं MAKE IT HAPPEN

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि भारत में बैंकिंग का मतलब व अधिकांशतः पीएसबी से ही होता है. दुखद है की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के केंद्र में होने के बावजूद पीएसबी का महत्व निरंतर कम करके आंका जा रहा है. इसका मज़ाक उड़ाया जाता है और आर्थिक चर्चा के दौरान भी इन्हें कमतर दिखाया जाता है. उनकी विफलताओंकों बढ़ा-चढाकर दिखाया जाता है. जब कि विशेषताओं को दबा दिया जाता है.

गौर करनेवाली बात है कि सरकार बैंकों में ज्यादा एनपीए होने का मूल कारण बड़ी परियोजनाओं व सरकारद्वारा प्रायोजित विभिन्न योजनाओं की सफलताको सुनिश्चित करने के लिए दिया गया ऋण है. सरकारी बैंकों में अक्सर राजनीतिक हस्तक्षेप के मामले देखे जाते है. जबकि निजी बैंक इस तरह के तामझाम व दबाव से मुक्त रहते है. एनपीए केवल बैंकों के लिए नहीं, समूची अर्थव्यवस्था के लिए नुकसानदेय है. बरहाल, आज कि तारीख में विमान, कोयला, बिजली, सड़क, दूरसंचार आदि क्षेत्रों में बैंकों के कॉर्पोरेट ऋण फसे है. ऋण-माफी के बाद कृषि क्षेत्र में भी एनपीए कि स्थिति गंभीर हुई है. आज भी किसान को जो अंशतः ऋण माफी मिली है उसमें भी वह पूर्ण ऋण माफी की मांग कर रहा है. और यह खतम होते ही अगली ऋण-माफी का इंतजार करेंगे. ऋण-माफी सामाजिक तौर पे अपनी अर्थव्यवस्था पे एक बड़ा आघात है, जो लोगों की मानसिकताओंकों पूर्ण बदल दे रहा है.

बैंकों के लिए एनपीए को साधारण तरीके से हम ऐसा कह सकते है की कोई ऋण लेता है और किसी भी कारण से उसे वसूल पाने में अक्षम होता है तो वह एक अनर्जक अस्ति बन जाता है क्यों कि उन्हें रिकवर करने की संभावना कम होती है. यह ऋण एनपीए होने की संभावना निम्न वजहों से हो सकती है.

- बैंक की ऋण देने की प्रक्रिया में खामी होना.
- कोई बैंकिंग आपदा
- जिस बिजनेस / कंपनी / इन्सान आदि का ऋण हो और उसका दिवालिया होना.
- हैसियत होने पर भी ऋण का बकाया नहीं भरना.
- बाजार का गिर जाना
- कमजोर जांच एवं निरंतरता निरीक्षण
- कमजोर कानूनी ढांचा
- ऋण के पैसो का दिक्परिवर्तन

इन सब के प्रभाव सभी लोगों और देश की अर्थव्यवस्था में पड़ता है क्योंकि अगर एनपीए बढ़ जाता है तो इस से बैंकों कि आर्थिक सेहत पर आघात है, बैंकों के मुनाफे पर सबसे ज्यादा असर होता है, साथ में ही शेयर होल्डर्स को नुकसान होता है एवं देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ जाती है. ऐसा नहीं की ऋण वसूली के लिए कोई मापदंड नहीं, पर उसका अनुपालन ठीक ढंग से नहीं हो पाता.

एनपीए को नियंत्रण में रखने के लिए हर देश के नियामक मापदंड निर्धारित करते है. जिनका अनुपालन वित्तीय संस्थाओं के लिए आवश्यक होता है. 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद अनर्जक अस्तियों को शीघ्र चिन्हित करने व खातों में सही तरीके व ईमानदारी से दर्शाने पर ज़ोर दिया गया है, जिनके तहत बैंकों में वसूली के लिए प्रत्येक कार्यालय में ऋण वसूली ट्रिब्युनल में नोडल अधिकारियों की नियुक्ति.

- बैंकों के द्वारा परिसंपत्तियों की वसूली पर ज़ोर और परिसंपत्ति पुनर्गठन कंपनियां, संकल्प एजेंटों की नियुक्ति
- राज्य स्तर के बैंकरों की समितियोंको राज्य सरकारों के साथ होनेवाले मामले सुलझाने के लिए सक्रिय होने के निर्देश देना.
- बैंकों में जानकारी साझा करने के आधार पर नए ऋण स्वीकृत करना.
- लोक अदालत तहत संदिग्ध अस्तियां एवं डूब जानेवाली अस्तियां समझोंतों से हासिल की जा सकती है. यह एक तुरंत ऋण राशि को वसूल करने का मार्ग है.
- डैब्ट रिकवरी ट्रिब्युनल एवं सरफेसी कलम 2002 भी ऐसे मार्ग है जिसके तहत बैंक अपना डुबा हुआ पैसा हासिल कर सकती है.
- असेट रिकवरी कन्स्ट्रकशन कंपनिया भी ऋण वसूली के लिए एक अच्छा विकल्प है.
- और सबसे महत्वपूर्ण की ऋण डुबानेवालों से शाखा के अधिकारियों का नियमित संबंध, जो उनको एनपीए से उनको होनेवाले वैयक्तिक नुकसान के बारे में बताए, ताकि शीघ्र गति से बकाया पा सके.

बैंकों का मानना है की एनपीए कैंसर के समान है लेकिन लाइलाज नहीं. बैंकों के लिए एनपीए जरूर बड़ा मर्ज बन गया है, लेकिन अब सरकारी बैंक इसे छुपाने के मूड में नहीं है. वे इसका इलाज करने के लिए तैयार है. अगर इस राशि की वसूली की जाती है तो सरकारी बैंकों की लाभप्रदता में इजाफा, लाखो लोगों को रोजगार, नीतिगत दर में कटौती का लाभ, आधारभूत संरचना का निर्माण, कृषि की बेहतरी, अर्थव्यवस्था को मजबूती, विकास को गति आदि मुमकिन हो सकेगा. पड़ताल में साफ है कि एनपीए को कम करने का उपाय उसके मर्ज में छुपे है. बैंक में व्याप्त अंदरूनी तथा दूसरी खामियों का इलाज, बैंक के कार्यकलापों में बेवजह दखलअंदाजी पर रोक, मानव संसाधन में बढ़ोतरी आदि की मदद से बढ़ते एनपीए पर निश्चित रूप से काबू पाया जा सकता है.

इसीलिए,

" आज से हमारा एकही नारा, वसूली पे रहेगा ध्यान हमारा...
एनपीए के इस कैंसर को,जड़ों से उखाड़ेंगे सारा.
तो आओ चलो पण करे, बैंक को अपने एनपीए से मुक्त करे...
मुनाफे में ला के बढ़ोतरी, जीवन अपना आनंद से भरे.

ब्लॉकचेन तकनीक

संदर्भ एवं पृष्ठभूमि

ब्लॉकचेन को भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिये क्रांतिकारी तकनीक माना जा रहा है, लेकिन इस प्रौद्योगिकी की उत्पत्ति के संबंध में बहुत अधिक जानकारी सुलभ नहीं है. ऐसा माना जाता है कि 2008 में बिटकॉइन का आविष्कार होने के बाद इस क्रिप्टो-करेंसी को समर्थन देने के लिये इस ब्लॉकचेन तकनीक की खोज की गई. यह एक ऐसी आधुनिक तकनीक है जिसके बिना बिटकॉइन या अन्य किसी भी प्रकार की क्रिप्टो-करेंसी का लेन-देन कर पाना असंभव है.

क्या है ब्लॉकचेन?

जिस प्रकार हज़ारों-लाखों कंप्यूटरों को आपस में जोड़कर इंटरनेट का अविष्कार हुआ, ठीक उसी प्रकार डाटा ब्लॉकों (आँकड़ों) की लंबी श्रृंखला को जोड़कर उसे ब्लॉकचेन का नाम दिया गया है. ब्लॉकचेन तकनीक तीन अलग-अलग तकनीकों का समायोजन है, जिसमें इंटरनेट, पर्सनल 'की' (निजी कुंजी) की क्रिप्टोग्राफी अर्थात् जानकारी को गुप्त रखना और प्रोटोकॉल पर नियंत्रण रखना शामिल है.

ब्लॉकचेन एक ऐसी तकनीक है जिससे बिटकॉइन तथा अन्य क्रिप्टो-करेंसियों का संचालन होता है. यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो यह एक डिजिटल 'सार्वजनिक बही-खाता' (Public Ledger) है, जिसमें प्रत्येक लेन-देन का रिकॉर्ड दर्ज़ किया जाता है. ब्लॉकचेन में एक बार किसी भी लेन-देन को दर्ज करने पर इसे न तो वहाँ से हटाया जा सकता है और न ही इसमें संशोधन किया जा सकता है.

इसके अंतर्गत नेटवर्क से जुड़े उपकरणों (मुख्यतः कंप्यूटर की श्रृंखलाओं, जिन्हें नोड्स कहा जाता है) के द्वारा सत्यापित होने के बाद प्रत्येक लेन-देन के विवरण को बही-खाते में रिकॉर्ड किया जाता है.

कैसे काम करती है ब्लॉकचेन तकनीक?

ब्लॉकचेन एक ऐसी प्रौद्योगिकी है जो सुरक्षित एवं आसानी से सुलभ नेटवर्क पर लेन-देनों का एक विकेंद्रीकृत डाटाबेस तैयार करती है. ब्लॉकचेन डाटा ब्लॉकों (आँकड़ों) की एक ऐसी श्रृंखला है जिसके प्रत्येक ब्लॉक में लेन-देन का एक समूह समाविष्ट होता है.

ये ब्लॉक एक-दूसरे से इलेक्ट्रॉनिक रूप से जुड़े होते हैं तथा इन्हें कूट-लेखन (Encryption) के माध्यम से सुरक्षित रखा जाता है. यह तकनीक सुरक्षित है तथा इसे हैक करना मुश्किल है. इसीलिये साइबर अपराध और हैकिंग को रोकने के लिये यह तकनीक सुरक्षित मानी जा रही है. इसके अंतर्गत नेटवर्क से जुड़ी कंप्यूटर की श्रृंखलाओं, जिन्हें नोड्स कहा जाता है, के द्वारा सत्यापित होने के बाद प्रत्येक लेन-देन के विवरण को बही-खाते में रिकॉर्ड किया जाता है.

ब्लॉकचेन की प्रमुख विशेषताएँ

- विकेंद्रीकरण और पारदर्शिता ब्लॉकचेन तकनीक की सबसे महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है, जिसकी वज़ह से यह तेज़ी से लोकप्रिय और कारगर साबित हो रही है.
- ब्लॉकचेन एक ऐसी तकनीक है जिसे वित्तीय लेन-देन (Financial Transactions) रिकॉर्ड करने के लिये एक प्रोग्राम के रूप में तैयार किया गया है. यह एक डिजिटल सिस्टम है, जिसमें इंटरनेट तकनीक बेहद मज़बूती के साथ अंतर्निहित है. ब्लॉकचेन डेटाबेस को वितरित करने की क्षमता रखता है अर्थात् यह एक डिस्ट्रिब्यूटेड नेटवर्क की तरह कार्य करता है.
- डेटाबेस के सभी रिकॉर्ड किसी एक कंप्यूटर में स्टोर नहीं होते, बल्कि हज़ारों-लाखों कंप्यूटरों में इसे वितरित किया जाता है.
- ब्लॉकचेन का हर एक कंप्यूटर हर एक रिकॉर्ड के पूरे इतिहास का वर्णन कर सकता है. यह डेटाबेस एन्क्रिप्टेड होता है.
- ब्लॉकचेन सिस्टम में यदि कोई कंप्यूटर खराब भी हो जाता है तो भी यह सिस्टम काम करता रहता है.
- जब भी इसमें नए रिकाड्र्स को दर्ज करना होता है तो इसके लिये कई कंप्यूटरों की स्वीकृति की ज़रूरत पड़ती है.
- ब्लॉकचेन को यूज़र्स का ऐसा ग्रुप आसानी से नियंत्रित कर सकता है, जिसके पास सूचनाओं को जोड़ने की अनुमति है और वही सूचनाओं के रिकॉर्ड को संशोधित भी कर सकता है.
- इस तकनीक में बैंक आदि जैसे मध्यस्थों की भूमिका समाप्त हो जाती है और व्यक्ति-से-व्यक्ति (P-to-P) सीधा संपर्क कायम हो जाता है.
- इससे ट्रांजेक्शंस में लगने वाला समय तो कम होता ही है, साथ ही गलती होने की संभावना भी बेहद कम रहती है.

कहाँ हो सकता है इसका उपयोग?

क्रिप्टो-करेंसियों के अलावा निम्नलिखित क्षेत्रों में ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग किया जा सकता है:

- सूचना प्रौद्योगिकी और डाटा प्रबंधन
- सरकारी योजनाओं का लेखा-जोखा
- सब्सिडी वितरण
- कानूनी कागज़ात रखने
- बैंकिंग और बीमा
- भू-रिकॉर्ड विनियमन
- डिजिटल पहचान और प्रमाणीकरण
- स्वास्थ्य आँकड़े
- साइबर सुरक्षा
- अर्थव्यवस्था और गवर्नेंस में ब्लॉकचेन

भारत सरकार यथासंभव प्रयास कर रही है कि अर्थव्यवस्था में डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देकर कैशलेस अर्थव्यवस्था की ओर कदम बढाए जाएं. इंटरनेट ने वित्तीय लेनदेन का परिदृश्य काफी हद तक बदल दिया है और नई तकनीक के प्रयोग से नकद लेन-देन का चलन पहले की अपेक्षा काफी कम हुआ है. कार्ड या किसी भी अन्य डिजिटल माध्यम से एक खाते से दूसरे में पैसे भेजना, किसी बिल का भुगतान करना, किराने या दवा की दुकान पर भुगतान करना आदि बेहद आसान हो गया है. भविष्य में ब्लॉकचेन तकनीक का प्रयोग कर इन सब को और मज़बूती देना संभव हो सकता है, लेकिन इसके लिये सही दिशा में सही समय पर सही कदम उठाना ज़रूरी होगा.

निष्कर्ष:

यह अपेक्षा की जा रही है कि बिचौलियों को हटाकर ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी सभी प्रकार के लेन-देन की दक्षता में सुधार लाएगी तथा इससे सभी लेन-देनों की लागत में भी कमी आएगी. साथ ही इससे पारदर्शिता में भी वृद्धि होगी तथा फर्जी लेन-देनों से मुक्ति मिलेगी, क्योंकि इसके अंतर्गत प्रत्येक लेन-देन को एक सार्वजानिक बही खाते में रिकॉर्ड तथा आवंटित किया जाएगा.

आज साइबर सुरक्षा, बैंकिंग और बीमा के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर चिंताएँ सामने आ रही हैं तथा ऐसे में इन्हें सुरक्षित बनाने के लिये ब्लॉकचेन तकनीक के उपयोग को लेकर स्वीकार्यता बढ़ती जा रही है. विशेषज्ञों का मानना है कि वर्तमान संदर्भों में ब्लॉकचेन एक गेमचेंजर साबित हो सकता है, बशर्ते इसके महत्त्व और क्षमताओं की पहचान समय रहते कर ली जाए.

डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए डिजिटल बैंकिंग प्रणाली की भूमिका और उसमें भारतीय भाषाओं का महत्व

भारत सरकार ने 'डिजिटल इंडिया अभियान' को पिछले पांच वर्षों से अभूतपूर्व गति प्रदान की है. हमारे प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा उदघोषित डिजिटल इंडिया अभियान की सफलता हेतु ठोस कार्ययोजना के साथ इसे सतत जारी रखा गया है. ज्ञातव्य है कि सरकार द्वारा अपनी भिन्न-भिन्न जन-कल्याणकारी योजनाओं के अंतर्गत देश के विभिन्न पात्र वर्गों को दी जाने वाली सब्सिडी की राशि पूरी तरह से लाभार्थियों को मिले, यह सुनिश्चित करने के लिए इसके तहत, बैंकों में बेसिक बचत बैंक खाता खोलने के लिए असाधारण जग-जागरण अभियान चलाया गया और प्रधानमंत्री जन-धन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना आदि जैसी अनेक महत्त्वपूर्ण योजनाओं के तहत, बैंकों में करोड़ों की संख्या में खाते खोले गए.

इस सम्बंध में यदि गुजरे जमाने पर नज़र डाले तो हम पाएंगे कि भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने एक बार अपने भाषण में कहा था कि "हम दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं तो वह गांवों में पहुंचते-पहुंचते 15 पैसा रह जाता है." इस डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत वर्तमान सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि दिल्ली से जब एक रुपया भेजा जाए तो वह गरीब के बैंक खाते में पूरी तरह से एक रुपया ही जमा हो. जन-सामान्य के लिए, डिजिटल इंडिया अभियान का यह सीधा सीधा लाभ है.

एक बार, केन्द्रीय मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी ने अपने वक्तव्य में कहा था कि 12 अंकीय यूनिक आइडेंटिफिकेशन नम्बर वाले आधार के साथ, अब 110 करोड़ बैंक खातों में से 76 करोड़ से अधिक बैंक खाते 'आधार' के साथ जोड़े जा चुके हैं. 'आधार' पूरी तरह से सुरक्षित है क्योंकि यह किसी की व्यक्तिगत जानकारी उजागर नहीं करता. डिजिटल इंडिया के लिहाज से यह निश्चय ही सराहनीय कदम है क्योंकि इससे सरकार की योजनाओं के अंतर्गत भारत की अधिकांश आबादी के बैंक खातों में पात्र राशि सीधे जमा हो रही है.

इससे जहां एक और कदम-कदम पर बिचौलियों/घूसखोरों की भरमार से लाभार्थियों को संभावित आर्थिक नुक्सान से मुक्ति मिल रही है. वहीं दूसरी ओर; योजनाओं का सही एवं उचित क्रियान्वयन भी संभव हो पा रहा है. वर्तमान में लगभग सभी भारतीय बैंकों ने अंतर्राष्ट्रीय मानदंड वाली उन्नत सूचना प्रौद्योगिकी को अपनाया है. उनके पास विभिन्न प्रकार के वैकल्पिक डिलेवरी चैनल्स उपलब्ध हैं, जिनके जरिए भारतीय समाज को 'हर जगह, हर कहीं, हर समय' बैंकिंग लेनदेन पूर करना अब सुलभ हो गया है. इनमें आधुनिक एटीएम, आधुनिक क्यिॉस्क मशीनें, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, विभिन्न विशेषताओं से युक्त डेबिट/क्रेडिट कार्डस् आदि शामिल हैं.

इन सबके बावजूद भी, परम्परागत बैंकिंग की सुविधाएं जैसे बैंकों की शाखाओं में चैक/ड्राफ्ट की उपलब्धता, शाखाओं में नकदी जमा एवं भुगतान की त्वरित सुविधाएं, आज भी बैंकों के ग्राहकों को बराबर उपलब्ध हो रही हैं. बैंकों में सीबीएस प्लेटफॉर्म पर कार्यरत कंप्यूटरों से, ग्राहकों को बेहतर ग्राहक सेवा मिल रही हैं.

आज बैंक का कोई भी ग्राहक, किसी बैंक की किसी विशिष्ट शाखा का ग्राहक नहीं है, अपितु वह बैंक की सभी शाखाओं का ग्राहक हो गया है. ग्राहक, बैंक की किसी भी शाखा में धन राशि जमा करा सकता है, चैक/ड्राफ्ट जमा करा सकता है और बैंक की किसी भी शाखा से धन आहरण कर सकता है. यही कारण है कि इस डिजिटल बैंकिंग के युग में ग्राहक अब अत्यंत सुलभ एवं आसान सेवाएं बैंकों से प्राप्त कर रहे हैं.

चूंकि मौजूदा सरकार डिजिटलीकरण के प्रति काफी गंभीर एवं संवेदनशील है, इसलिए इस दिशा में प्रगति तेजी से होना स्वाभाविक है. वर्ष 2019 के अंत तक देश के तीन लाख से अधिक गांवों में ब्राडबैंड पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया है. हमारा देश विश्व का तीसरे नम्बर का देश है, जिसमें लगभग 35.50 करोड़ लोग से अधिक इंटरनेट यूजर्स हैं. इस क्षेत्र के प्रथम दो देश, चीन एवं अमेरिका हैं. गूगल का अनुमान है कि आगामी कुछ वर्षों में ही भारत में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या सबसे ज्यादा होगी.

यहां गौरतलब यह भी है कि भारत एक ऐसा देश है, जिसकी जनसंख्या का 65 प्रतिशत भाग, 35 वर्ष से कम उम्र का है और इस उम्र के युवाओं में तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने तथा उसमें नए-नए अनुसंधान करने की तीव्र इच्छा रहती है. इस लिहाज से निश्चय ही भारत डिजिटलीकरण की दिशा में तेजी से अग्रसर होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है. सर्वे बताते हैं कि अब विश्व, भारतीय युवाओं के तकनीकी ज्ञान का लोहा मान गया है. इस सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति के युग में, मोबाइल निर्माताओं ने जबरदस्त क्रांति लाई है क्योंकि मोबाइल केवल बात करने का माध्यम नहीं रह गया है; अब यह आम आदमी की दैनंदिन जिंदगी का परम आवश्यक साधन बन गया है.

यह एक बहु-उद्येशीय उपयोगी डिवाइस है, जिसके बगैर आम आदमी अब नहीं रह सकता है. मोबाइल, विशेषकर स्मार्ट फोन डिवाइस से कैमरा, रेडियो, ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग, व्यक्तिगत डायरी, केलकुलेटर, घड़ी, इंटरनेट सुविधा, मैसेज भेजने एवं प्राप्त करने का अचूक माध्यम, यूटिलिटी पेमेंट इत्यादि जैसी अनेक प्रकार की सुविधाएं इससे मिल रही हैं. यह एक प्रकार का मोबाइल पी.सी. (कंप्यूटर) है, लेपटॉप है, स्टेनोग्राफर है यानी कुल-मिलाकर यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि अब यह एक 'मिनी ऑफिस' हो गया है. डिजिटल इंडिया की संकल्पना को मोबाइल डिवाइस के द्वारा बड़ी आसानी से पूरा किया जा रहा है. मोबाइल के जरिए, बेसिक बैंकिंग का संपूर्ण कार्य घर बैठे किया जा रहा है. डिजिटल बैंकिंग की सफलता में स्मार्ट मोबाइल सेट की अहम भूमिका हो गई है.

जहां तक सूचना प्रौद्योगिकी में भाषा अथवा भाषाओं के उपयोग की बात है तो इस समूची सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति कके युग में अहम किरदार यद्यपि अंग्रेजी भाषा का है, तथापि, अब विश्व के तमाम देश जो सूचना प्रौद्योगिकी की विभिन्न विधाओं के जनक हैं, निर्माता हैं, अविष्कारक हैं, यह बात भलीभांति समझ चुके हैं कि भारत जैसे विशाल उपभोक्ता बाजार में यदि उन्हें अपना माल बेचना है तो इस डिवाइस को सभी भारतीय भाषाओं में कार्य करने की सुविधा के साथ उपलब्ध कराना होगा. यही कारण है कि विश्व के विकसित देशों द्वारा निर्मित स्मार्ट मोबाइल हैण्डसेटस् में हमारी सभी प्रमुख भाषाओं में कार्य करने की सुविधा विद्यमान हो गई है. बेहतर होगा कि हम सभी भारतीय, तकनीकी के प्रयोग में अपनी भाषाओं का उपयोग करने में स्वयं आत्म-गौरव महसूस करें. अपनी भाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें और करवाएं तथा करने वालों की अनुमोदना करें.

यदि हम चाहते हैं कि हमारे देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिंदी, विश्व-भाषा बने, यह संयुक्त राष्ट्र की भाषा बने, इसे विश्व स्तर पर मान्यता मिले तो सबसे पहले हमें अपनी इस लोकप्रिय भाषा का सर्वाधिक प्रयोग सुनिश्चित करना होगा. इसे वह सम्मान देना होगा, जिसकी कि यह हक़दार है.

यह कहना समीचीन होगा कि डिजिटल इंडिया के सपने को अक्षरश: साकार करने के लिए यह जरूरी होगा कि देश की संपूर्ण सूचना प्रौद्योगिकी, भारतीय भाषाओं की सुविधा से युक्त हो. सर्वेक्षण के आंकड़े वयां करते हैं कि देश की केवल 5 से 6 प्रतिशत जनसंख्या ही अंग्रेजी भाषा का समुचित ज्ञान रखती है; जबकि शेष जनसंख्या अपनी भारतीय भाषाओं का ज्ञान रखती है. इसमें भी, हमारे देश की लगभग 60 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या 'हिन्दी भाषा' का ज्ञान रखती है. इसलिए, यह जरूरी है कि डिजिटल इंडिया की संकल्पना को पूरा करने के लिए, केवल भारतीय भाषाओं का प्रयोग जरूरी है.

इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर हमारी सरकार के साथ-साथ तकनीकी क्षेत्र से जुड़े सभी विद्धानों, वैज्ञानिकों, इंजीनियरों को गंभीरता पूर्वक विचार करना आवश्यक होगा और तदनुसार ठोस कदम उठाने होंगे. कुल-मिलाकर यह तय है कि हमारा देश, डिजिटल इंडिया की संकल्पना को साकार करने के लिए, देश की अर्थव्यवस्था की 'रीढ़ की हड्डी' कहे जाने वाली भारतीय बैंकिंग प्रणाली को डिजिटल बैंकिंग में परिणत करेगा और इसमें भारतीय भाषाओं की जबरदस्त अहम भूमिका होगी. इसमें सबका सहयोग, सकारात्मक दृष्टिकोण और एकमेव देश की प्रगति का लक्ष्य अपना अहम किरदार निभाएगा.

....

कविताएं

- प्रशांत डोले, मुख्य प्रबन्धक (विधि)आं.का. पुणे

असीम

आखरी बार गिरते हुए
मैंने पाया की
छोटी सी दुनिया विशाल हो रही हैं
10 *10 की छत थी
अब असीम हो गयी हैं.
डर था, भय था
के गिर पड़ूँगा सिर के बल
थामना चाहा कभी लाठी
कभी तिनका
कभी अपना और पराया भी.
पर अब लगाता हूँ गोता
प्रकाश पुंज मे
कि अब जहां भी मेरा
आसमान भी मेरा.

कवि होना मजबूरी नहीं है

और नहीं कविता कोई शब्दछल.
वह कोई पंडित भी नहीं
जो ज्ञान का प्रदर्शन करे.
न वो यथार्थ से पलायन कर
सपनों के संसार मे रत जीव है.
हाँ ,
सत्य का पथिक जरूर है,
जो समझ को कई रंगो मे , छंदों मे
पेश करता है.
ताकि दुनियादारी के नुकीले सच
जीवन को बेरंग ना करे.

क्षितिज को निहारना

मेरा सबसे प्रिय काम है,
हरेक शाम का
जैसे जाम है.
सोचता हूँ, इतने रंग
बिखरते कैसे हैं,
यह किससे मुलाक़ात की खुशी हैं ?
कहते हैं,
क्षितिज एक आभास हैं,
धरती और आसमां
किसी भी बिन्दु पर मिलते नहीं हैं,
बस वैसे नजर आते हैं.
मेरे भीतर भी आसमां,
और जमीं हैं,
उन्हें देखता हूँ मै आजकल.
विचारहीन हो जाता हूँ जब,
सांस जब लय मे चलती हों,
तब क्षितिज पर जमीं और आसमां
का
मिलन देख पाता हूँ.
एक क्षितिज कहीं दूर,
एक क्षितिज मेरे भीतर.

आखिरी पड़ाव

सुंदरबन इलाके में रहने वाले ग्रामीणों पर हर समय जंगली जानवरों का खतरा बना रहता था. खासतौर पर जो युवक घने जंगलों में लकड़ियाँ चुनने जाते थे उनपर कभी भी बाघ हमला कर सकते थे. यही वजह थी की वे सब पेड़ों पर तेजी से चढ़ने-उतरने का प्रशिक्षण लिया करते थे.प्रशिक्षण, गाँव के ही एक बुजुर्ग दिया करते थे ; जो अपने समय में इस कला के महारथी माने जाते थे. आदरपूर्वक सब उन्हें बाबा-बाबा कह कर पुकारा करते थे.

बाबा कुछ महीनो से युवाओं के एक समूह को पेड़ों पर तेजी से चढ़ने-उतरने की बारीकियां सिखा रहे थे और आज उनके प्रशिक्षण का आखिरी दिन था. बाबा बोले , " आज आपके प्रशिक्षण का आखिरी दिन है,मैं चाहता हूँ , आप सब एक - एक बार इस चिकने और लम्बे पेड़ पर तेजी से चढ़ – उतर कर दिखाएँ." सभी युवक अपना कौशल दिखाने के लिए तैयार हो गए. पहले युवक ने तेजी से पेड़ पर चढ़ना शुरू किया और देखते -देखते पेड़ की सबसे ऊँची शाखा पर पहुँच गया. फिर उसने उतरना शुरू किया , और जब वो लगभग आधा उतर आया तो बाबा बोले , "सावधान , ज़रा संभल कर. … आराम से उतरो …क़ोई जल्दबाजी नहीं…."

युवक सावधानी पूर्वक नीचे उतर आया. इसी तरह बाकी के युवक भी पेड़ पर चढ़े और उतरे , और हर बार बाबा ने आधा उतर आने के बाद ही उन्हें सावधान रहने को कहा. यह बात युवकों को कुछ अजीब लगी , और उन्ही में से एक ने पुछा , " बाबा , हमें आपकी एक बात समझ में नहीं आई , पेड़ का सबसे कठिन हिस्सा तो एकदम ऊपर वाला था , जहाँ पे चढ़ना और उतरना दोनों ही बहुत कठिन था , आपने तब हमें सावधान होने के लिए नहीं कहा , पर जब हम पेड़ का आधा हिस्सा उतर आये और बाकी हिस्सा उतरना बिलकुल आसान था तभी आपने हमें सावधान होने के निर्देश क्यों दिए ? "

बाबा गंभीर होते हुए बोले , "" बेटे ! यह तो हम सब जानते हैं कि ऊपर का हिस्सा सबसे कठिन होता है , इसलिए वहां पर हम सब खुद ही सतर्क हो जाते हैं और पूरी सावधानी बरतते हैं. लेकिन जब हम अपने लक्ष्य के समीप पहुँचने लगते हैं तो वह हमें बहुत ही सरल लगने लगता है…. हम जोश में होते हैं और अति आत्मविश्वास से भर जाते हैं और इसी समय सबसे अधिक गलती होने की सम्भावना होती है. यही कारण है कि मैंने तुम लोगों को आधा पेड़ उतर आने के बाद सावधान किया ताकि तुम अपनी मंजिल के निकट आकर कोई गलती न कर बैठो ! "युवक बाबा की बात समझ गए, आज उन्हें एक बहुत बड़ी सीख मिल चुकी थी.

मित्रों, सफल होने के लिए लक्ष्य निर्धारित करना बहुत ही जरूरी है, और ये भी बहुत ज़रूरी है कि जब हम अपने लक्ष्य को हासिल करने के करीब पहुँच जाएँ, मंजिल को सामने पायें तो कोई जल्दबाजी न करें और पूरे धैर्य के साथ अपना कदम आगे बढ़ाएं. बहुत से लोग लक्ष्य के निकट पहुंच कर अपना धैर्य खो देते हैं और गलतियां कर बैठते हैं जिस कारण वे अपने लक्ष्य से चूक जाते हैं. इसलिए लक्ष्य के आखिरी पड़ाव पर पहुँच कर भी किसी तरह की असावधानी मत बरतिए और लक्ष्य प्राप्त कर के ही दम लीजिये.

हमारी पुणे शहर की एफ.सी. रोड़ शाखा के **एक सम्माननीय ग्राहक श्री उत्तम खजुरे,** पी.एम.पी.एम.एल. के कर्मचारी ने हमारी शाखा द्वारा दी जारी बेहतर ग्राहक सेवा से प्रसन्न होकर, शाखा परिसर के अंदर ही एक कविता की रचना की और इसे बैंक की गृहपत्रिका में स्थान देने का अनुरोध किया:

सेन्ट्रल बैंक की बेहतर सेवा

कठिनाइयों के इस दौर में बड़ी सरलता से,
बड़ी एकता से काम करते हो आप
कोई अलग नहीं, कोई दलग नहीं
सबको हिंदुस्तानी मानते हो आप

ग्राहकों की सेवा ही ईश्वर सेवा है
इस बात को बेहतर जानते हो आप
चाहे हम किसी भी योजना के बारे में पूछें
विस्तार से सारी जानकारी देते हो आप

आपस में काम ऐसे करते हो
जैसे एक ही घर के सदस्य हो आप
अपने काम में खुशी कैसे पाई जाती है
इस बात को बखूबी सिखलाते हो आप

घंटों का काम चंद मिनटों में, कैसे कर जाते हो आप
आप लोगों का बर्ताव ही, ग्राहकों में जगाता है उम्मीद की किरण
और इस किरण से ही 'कस्टमर डिलाइट' के जनक बन जाते हो आप

धन्य है "सेन्ट्रल बैंक" और धन्य हो "आप"

खुशवंत सिंह द्वारा वर्णित ज़िंदगी के दस सूत्र

- ***अच्छा स्वास्थ्य*** - अगर आप पूरी तरह स्वस्थ नहीं हैं, तो आप कभी खुश नहीं रह सकते. बीमारी छोटी हो या बड़ी, ये आपकी खुशियां छीन लेती हैं.

- ***ठीक ठाक बैंक बैलेंस*** - अच्छी ज़िंदगी जीने के लिए 55 साल तक काम करना चाहिए और बहुत अमीर होना ज़रूरी नहीं. पर इतना पैसा बैंक में हो कि आप आप जब चाहे बाहर खाना खा पाएं, सिनेमा देख पाएं, समंदर और पहाड़ घूमने जा पाएं, तो आप खुश रह सकते हैं. उधारी में जीना आदमी को खुद की निगाहों में गिरा देता है.

- ***अपना मकान*** - मकान चाहे छोटा हो या बड़ा, वो आपका अपना होना चाहिए. अगर उसमें छोटा सा बगीचा हो तो आपकी ज़िंदगी बेहद खुशहाल हो सकती है.

- ***समझदार जीवन साथी*** - जिनकी ज़िंदगी में समझदार जीवन साथी होते हैं, जो एक-दूसरे को ठीक से समझते हैं, उनकी ज़िंदगी बेहद खुशहाल होती है, वर्ना ज़िंदगी में सबकुछ धरा का धरा रह जाता है, सारी खुशियां काफ़ूर हो जाती हैं. हर वक्त कुढ़ते रहने से बेहतर है अपना अलग रास्ता चुन लेना.

- ***दूसरों की उपलब्धियों से न जलना*** - कोई आपसे आगे निकल जाए, किसी के पास आपसे ज़्यादा पैसा हो जाए, तो उससे जले नहीं. दूसरों से खुद की तुलना करने से आपकी खुशियां खत्म होने लगती हैं.

- ***गप से बचना*** - लोगों को गपशप के ज़रिए अपने पर हावी मत होने दीजिए. जब तक आप उनसे छुटकारा पाएंगे, आप बहुत थक चुके होंगे और दूसरों की चुगली-निंदा से आपके दिमाग में कहीं न कहीं ज़हर भर चुका होगा.

- ***अच्छी आदत*** - कोई न कोई ऐसी हॉबी विकसित करें, जिसे करने में आपको मज़ा आता हो, मसलन गार्डेनिंग, पढ़ना, लिखना. फालतु बातों में समय बर्बाद करना ज़िंदगी के साथ किया जाने वाला सबसे बड़ा अपराध है. कुछ न कुछ ऐसा करना चाहिए, जिससे आपको खुशी मिले और उसे आप अपनी आदत में शुमार करके नियमित रूप से करें.

- ***ध्यान*** - रोज सुबह कम से कम दस मिनट ध्यान करना चाहिए. ये दस मिनट आपको अपने ऊपर खर्च करने चाहिए. इसी तरह शाम को भी कुछ वक्त अपने साथ गुजारें. इस तरह आप खुद को जान पाएंगे.

- ***क्रोध से बचना*** - कभी अपना गुस्सा ज़ाहिर न करें. जब कभी आपको लगे कि आपका दोस्त आपके साथ तल्ख हो रहा है, तो आप उस वक्त उससे दूर हो जाएं, बजाय इसके कि वहीं उसका हिसाब-किताब करने पर आमदा हो जाएं.

- ***अंतिम समय*** - जब यमराज दस्तक दें, तो बिना किसी दुख, शोक या अफसोस के साथ उनके साथ निकल पड़ना चाहिए अंतिम यात्रा पर, खुशी-खुशी. शोक, मोह के बंधन से मुक्त हो कर जो यहां से निकलता है, उसी का जीवन सफल होता है.

स्टेचू ऑफ़ यूनिटी

भारत के एक राजनेता और स्वतन्त्रता सेनानी सरदार वल्लभ भाई पटेल (1875-1950) के सम्मान में गुजरात राज्य में एक बड़ा भारी पुतला बनाया गया हैं. यह स्थान स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के नाम से प्रसिद्ध है. यह दुनिया का सबसे ऊंचा पुतला है. इसकी ऊंचाई 182 मीटर (597 फिट) है. यह स्टेचू नर्मदा नदी से 'साधू बेट' नामक एक टापू पर बनाया है. यह ग्राम केवाड़ीया कोलोनी के नजदीक है जो बरोडा शहर से करीब 100 कि.मी की दूरी पर है

इसका डिजाइन जाने माने भारतीय संगतराश श्री राम सुतार जी ने बनाया है. इस प्रोजेक्ट की घोषणा वर्ष 2010 में हुई थी और लार्सन एंड टुब्रो द्वारा प्रोजेक्ट पर कार्य वर्ष 2014 में शुरू हुआ. प्रोजेक्ट में कुल लागत रु.2989 करोड़ की आई है. इस पुतले का अनावरण 31 अक्तूबर,2018 को भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के करकमलों से हुआ. दिनांक 31 अक्तूबर,2020 को सरदार पटेल की 145वीं जन्मतिथि थी.

दिनांक 07 अक्तूबर,2010 को श्री नरेन्द्र मोदी ने इस प्रोजेक्ट की घोषणा पत्रकार परिषद् में की थी. सरदार वल्लभ भाई पटेल राष्ट्रीय एकता ट्रस्ट का गठन इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए किया गया.स्टेचू ऑफ़ यूनिटी नामक एक आन्दोलन इस परियोजना के समर्थन में चलाया गया. इस आन्दोलन के चलते, किसानो ने पुतले को बनाने हेतु अपने निरुपयोगी फ़ार्म औजारों का दान किया जिसका उपयोग पुतले की नींव बनाने हेतु किया गया. परियोजना के समर्थन के लिए सूरत में 15 दिसंबर,2013 को 'रन फॉर यूनिटी' नामक एक मैराथन का आयोजन किया गया.

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अग्रणी नेता थे. वे भारत के पहले गृहमंत्री थे. स्वतंत्र पूर्व काल के अनेक राज्यों का भारत देश में विलय करने का तथा एक एखंड भारत देश स्थापित करने का श्रेय सरदार पटेल को दिया जाता है. स्टेचू ऑफ़ यूनिटी का यह स्मारक, अहमदाबाद आंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर सरदार पटेल के पुतले की विस्तारित प्रतिकृति है. श्री राम सुतार के सुपुत्र श्री अनिल सुतार बताते है कि सरदार की अभिव्यक्ति, उनके खड़े रहने का ढंग उनकी गरिमा, आत्मविश्वास, उनकी लोहे जैसी इच्छाशक्ति और उनकी सहृदयता आदि इस पुतले में दिखती है. उनका ऊंचा सिर, कंधे पर लहराता उनका शॉल और उनके हाथो की स्थिति से ऐसे लगता है कि वे अभी चलने को तैयार हैं.

इन पुतलो के तीन मॉडल बनाए गए पहला जो 3 फिट ऊंचा था, दूसरा 18 फिट तथा तीसरा 30 फिट ऊंचा बनाया गया. यह स्टेचू 220 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से चलने वाली हवा तथा 6.5 रिश्चर स्केल के भूकंप को सह सकता है. यह पुतला 182 मी ऊंचा है तथा उसका बेस 58 मी ऊंचा है जिसको मिला के पूर्ण स्ट्रक्चर की ऊँचाई 240 मी है. यह परियोजना 56 माह में पूरी हुई जिसमे से 15 माह परियोजना के आलेखन में, 40 माह निर्माण कार्य तथा 2 माह हस्तांतरण के कार्य में लगे. पुतला पांच विभागों में बंटा है जिसमे से कुल तीन आम जनता के लिए खुले है.

पुतले के बेस से सरदार के पुतले के घुटने तक पहला विभाग है जिसमे तीन तल है जहां प्रदर्शनी, स्मारक, बगीचा है. दूसरा चरण 149 मीटर के ऊँचाई तक का है तथा तीसरा 153 मीटर का है. चौथे ज़ोन में रखरखाव की व्यवस्था है तथा पांचवा ज़ोन पुतले के काँधे तथा सिर का भाग है. पुतले के पैरों में दो एलेवेटर है जिन से एक साथ 26 लोगों को मात्र 30 सेकण्ड में गेलेरी में ले जाया जा सकता है. यह गेलेरी 152 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और एक साथ 200 लोग यहाँ बैठ सकते है. स्मारक में आवाजाही की सुविधा हेतु केवादिया ग्राम से एम्फिबियन बस का उपयोग करना तथा रोपवे की सुविधा दी जा रही है.

इस स्मारक को एक वर्ष में करीब पच्चीस लाख लोग भेट देंगे यह अनुमान है. स्मारक के लोकार्पण के पश्चात पहले पखवाड़े में ही करीब 1.20 लाख लोगो ने भ्रमण के दौरान स्मारक के परिदर्शन किए. स्मारक में आस पड़ोस के देहातो से बसे लोगो को रोजगार दिया गया है. टूरिस्ट गाईड के पद पर कार्य करने वालो कों सरकार ने उचित ट्रेनिंग दे कर लैस किया है. स्मारक हर सोमवार को सैलानियों के लिए बंद रहता है.

गुलदस्ता

रचियता-सुश्री मीरा, परिवीक्षाधीनअधिकारी, आंचलिक कार्यालय पुणे

किसी प्रियजन को दूँ उपहार में फूल
यह विचार लगा मुझे कूल,
आर्किड लिली गुलाब मुझे भा गए
दिल को मेरे सुकून दिला गए,
भारी सा गुलदस्ता मैंने उसे थमा दिया
लगा जैसे घर की रौनक को बड़ा दिया,
पार्टी हुई ख़तम, अरे ये क्या हुआ
सारे फूलो को कूड़ेदान नसीब हुआ,

हाँ सच था गुलदस्ता कितनी देर चलना था
जड़ से निकले फूलो का दम निकलना था,
अगर जड़ो से लगे ही देती
तो रोज़ गुलदस्ते से फूल वह लेती ,
सभी यह तरीका अपना सकते है
फूलो के पॉट को उपहार बना सकते है,
जब खिलेंगे फूल तब तब याद आओगे
ताज़ी सुगंध और सुंदरता से
सबके दिल में बस जाओगे ॥

थेट पंकज कोटलवारच्या लेखणीतुन – 'करोडपती मेंदुचं रहस्य'

तो मार्च किंवा एप्रील महीना असावा, वर्ष २०१५, एका संध्याकाळी, उदास चेहऱ्याने मी ऑफीसमध्ये बसुन होतो, पैशाची प्रचंड चणचण जाणवत होती, लातुरमध्ये भयाण दुष्काळ पडला होता, जिकडेतिकडे भीषण पाणीटंचाईच्याच चर्चा चालु होत्या. बांधकामे पुर्णपणे ठप्प झाली होती, व्यवसायाने मी आर्किटेक्ट, मागचा एक वर्ष तुटपुंज्या बचतीवर कसेबसे निभावले होते, पण आता खिसे रिकामे झाले होते, गरजा कशा भागवायच्या अशी चिंता सतावत होती, कसलाच मार्ग दिसत नव्हता, पैशाचे दुखणे खरचं अवघड जागचे दुखणे असते, "सहनही होत नाही आणि सांगताही येत नाही", कुणापुढे आर्थिक अडचणी सांगीतल्या तर उरलीसुरली अब्रुही जाते.

विशेष काही काम नव्हतं, (खरतरं कसातरी टाईमपास करुन दिवस ढकलायचो, बस्स!) मन मोकळं करायला जवळचा, आपला म्हणावा, असा कोणी मित्रही नव्हता, उदास राहण्याने आणि टेंशन घेण्याने कशाचाही कंटाळा येवु लागतो, अशा वेळी मुड बदलण्यासाठी चांगलं पुस्तक वाचणं आणि रिचार्ज होणं, हाच एक हुकुमी उपाय असतो आपल्याजवळ. मग त्या संध्याकाळी खुप दिवसांनी जड मनाने लायब्ररीत गेलो, कपाटात ओळीने पुस्तकं काचेच्या कपाटात मांडुन ठेवली होती, त्या कपाटांपुढे मी रेंगाळत होतो, अचानक एका पुस्तकाच्या टायटलमधल्या 'करोडपती' शब्दाने माझं लक्ष वेधुन घेतलं, पैशासाठी खुप भुकेला होतो मी, इतकं माझ्याएवढं गरजु ह्या ब्रम्हांडात कोणीच नव्हतं! माझं आयुष्य उजळुन टाकणारं, 'करोडपती मेंदुचं रहस्य' हे ते पुस्तक, मी तात्काळ ते बुक इश्शु केलं, पुन्हा ऑफीसला येवुन बसलो, सात वाजले असतील, वाचायला सुरुवात केली, आणि पुढचा अडीच तास कसा गेला, कळालंच नाही! ते पुस्तक वाचताना, माझ्यात एका आगळयावेगळया शक्तीचा संचार झाला, काही वेळा मी हसलो, कधी डोळयाला धारा लागल्या, अंतर्मुख आत्मपरीक्षण करण्यास ह्या पुस्तकाने भाग पाडलं, ह्या पुस्तकाचा लेखक आहे, टी. हार्व एकर, अमेरीकेतल्या एका माणसानं हे पुस्तक लिहलयं, हार्व एक जो प्रचंड मेहनती, कष्टाळु माणुस होता, पण अनेक बिजनेस करुनही, वयाच्या तिशीत कफल्लकच होता, दहा वर्षात तीनदा दिवाळखोर जाहीर होवुन, अद्याप सुशिक्षीत बेकारच होता, त्याला निराशेने घेरलेले असते आणि आईवडीलांच्या मदतीवर तो जगत होता, एका रात्री त्याच्याकडचे पुर्ण पैसे संपलेले असतात, आणि त्याला आपल्या गाडीत पेट्रोल भरायचे असते, तेव्हा आपल्याकडचे सुटे पैसे, पिशवीमध्ये तो एकत्र करतो आणि आपली खटारा कार घेऊन पेट्रोल पंपावर जातो, आणि ती चिल्लरची पिशवी पाहुन तिथले लोक जोरजोरात हसु लागतात, हार्वला खुप ओशाळवाणे वाटते, तिथुन कसाबसा बाहेर पडून तो, पुढे जाऊन तो रस्त्याच्या कडेला गाडी थांबवतो, झालेला अपमान त्याला सहन होत नाही, तो ओक्शाबोक्शी रडु लागतो,

त्याला स्वतःच्या गरीब असण्याचा तिटकारा येत असतो, स्वतःवरच दया येत असते, प्रचंड बुद्धीमान असुनही ही वेळ का आली? हा प्रश्ण त्याला सतावत असतो, आणि तो एक गर्जना करतो, "बस्स! हे सगळे मी आता बदलुन दाखवीन! या जगाला मी श्रीमंत बनुन दाखवीन!"

त्या दिवसांपासुन त्याने झपाटुन मेहनत घेतली, त्याची रोमहर्षक कथा मुळ पुस्तकात वाचता येईल, पण थोडक्यात सांगायचे तर पुढच्या फक्त दोन वर्षांनी हार्वची कंपनी, "फॉर्चुन ५००" मध्ये जाऊन पोहचली, गरीबीवर मात करुन हार्व 'श्रीमंत कसे व्हावे' हे शिकवणारा मोटीव्हेटर टिचर झाला, जगभर त्याचे सेमिनार होतात. काय होतं हे करोडपती होण्याचं तंत्र! अशी पुस्तकं वाचुन, खरचं एका रात्रीत, असं आयुष्य बदलत का? झटपट श्रीमंत व्हायला शॉर्टकट असतात का ही पुस्तकांना खपवुन बेस्ट सेलर बनवण्याची नुसती बुवाबाजी? श्रीमंत बनण्यासाठी हार्वने ह्या पुस्तकात सतरा नियम सांगीतलेत, जे वापरुन मलाही खुप फायदा झाला, मी आर्थिकदृष्ट्या स्वतंत्र झालो, हे संपुर्ण पुस्तक श्रीमंत आणि गरीब ह्या दोन शब्दांभोवती फिरते, लेखक स्पष्ट करतो की कुणालाही गरीब म्हणुन त्याला अजिबात हिणवायचं नाहीये, श्रीमंत आणि गरीब हे शब्द फक्त आपल्या मानसिकता दाखवण्यासाठी वापरले आहेत.

तर श्रीमंत बनण्यासाठी काय करायला हवे? याबद्द्ल या पुस्तकातुन मला जे काही समजले, ते मी तुम्हाला सांगणार आहे.

1) श्रीमंत लोकांना वाटते, मी माझं आयुष्य घडवतोय!, गरीब लोकांना वाटते, नियती माझ्याशी खेळत आहे!

हार्व म्हणतो, माणुस पहीले मनाने श्रीमंत होतो, आणि मग प्रत्यक्षात पैसा त्याच्यापाशी येतो, श्रीमंत लोक यश-अपयशाची जबाबदारी घेतात, गरीब लोक दुःखाचा बागुलबुवा करतात, त्यांना वाटतं, की आयुषय त्यांना शिक्षा देत आहे, म्हणुण ते अधिकाधिक गरीब होतात.

2) श्रीमंत लोक जिंकण्यासाठी मनसोक्त खेळतात, गरीब लोक न हरण्यासाठी लढत राहतात.

श्रीमंत लोक उराशी मोठी ध्येय बाळगतात, आणि संधी मिळताच पुर्ण ताकतीनिशी त्यावर तुटुन पडतात, म्हणुन बहुतांश वेळा फत्ते होतात, गरीब लोक आयुष्यकडून जेमतेम अपेक्षा ठेवतात, मग समोर दडलेल्या संधीही त्यांना दिसत नाहीत, आणि असलीच तर तिचा वापर करण्याची उर्जाही त्यांच्यात उसळुन, त्यांच्यात निर्माण होत नाही.

3) श्रीमंत लोक श्रीमंत होण्यासाठी समर्पित असतात, गरीब लोकांजवळ श्रीमंत व्हायची फक्त इच्छा असते.

समर्पित होणं म्हणजे झपाटुन जाणं, वेळ पडल्यास, न कुरकुरता, दिवसातुन अठरा-वीस तास सहज काम करणं, ध्येयासाठी वेडं होणं, मग इतरांना अशक्यप्राय आणि स्वप्नवत वाटणाऱ्या गोष्टीही, पायाशी येऊन सलाम करु लागतात.नुसती इच्छा बाळगुन स्वप्ने पुर्ण होत नाहीत, त्यांना प्रत्यक्षात आणण्यासाठी वाटचाल करावीच लागते. ह्या जगात फुकट काहीही मिळत नाही, कशाच्या तरी बदल्यात काहीतरी मिळतं.

4) श्रीमंत लोकं मोठा विचार करतात, गरीब लोकं अल्पसंतुष्ट असतात.

तुमचं व्यक्तीमत्व आणि तुमचा व्यवसाय किती जास्त लोकांवर प्रभाव टाकतयं, त्यावरुन तुमच्याकडे येणाऱ्या संपत्तीचा ओघ नक्की होतोय. करोडपती लोकं असे व्यवसाय निवडतात की जो हजारो-लाखो लोकांच्या आयुष्यावर परीणाम करेल. व्यवसायाला अशा पातळीवर नेऊन ठेवतात.

5) श्रीमंत लोक संधीवर लक्ष केंद्रीत करतात, गरीब लोकांना मार्गातले अडथळे तेवढे दिसतात,

प्रत्येक रस्त्यावर खाच खळगे असणार, पण म्हणुन प्रवासच टाळायचा का? अडथळयांवर मात करुन गंतव्य स्थानी पोहचण्याचा आगळावेगळा आनंद लुटायचा का खड्ड्यांना नाके मुरडायची? श्रीमंत आणि गरीब लोकांमध्ये हाच फरक असतो.

6) श्रीमंत लोक इतरांच्या संपत्तीचा द्वेष करत नाहीत, गरीब लोक इतरांच्या श्रीमंतीचा हेवा करतात.

इथे लेखक एक अनुभव कथन करतो, जेव्हा स्वतःची महागडी जॅक्वार कार घेऊन एका झोपडपट्टीत मित्राला भेटायला गेला, तेव्हा तिथल्या रहीवाशांनी कारवर स्क्रॅचेस पाडुन बहुमुल्य गाडीची नासधुस केली, दुसरया वेळी त्याने एक खटारा गाडी नेली, ती सुखरुप होती. जे लोक स्वतःला पिडीत, व्यवस्थेचे बळी मानतात, त्यांच्या मानसिकतेमुळे त्यांच्या उत्कर्षात ते स्वतःच बाधा मानतात, ते श्रीमंताचा तिरस्कार करतात, पर्यायाने संपत्तीचा तिरस्कार करतात, ज्या गोष्टीचा आपण तिरस्कार करु, ती जवळ कशी येईल? म्हणुन श्रीमंत दिवसेंदिवस अधिक श्रीमंत होतात आणि इतरांविषयी, त्यांच्या चांगल्या गोष्टींचा मत्सर करणारे, द्वेषभावना बाळगणारे, दिवसेंदिवस, अधिकाधिक गरीब होतात.

म्हणुन एखाद्याचा सुंदर बंगला बघितल्यास, आणि तुम्हालाही तसा हवा असल्यास त्याला मनःपुर्वक आशिर्वाद द्या, एखाद्याची अलिशान कार, एखाद्याचं सुंदर व्यक्तीमत्व बघुन, त्याची मनमोकळेपणाने स्तुती करा, तो करु शकतो, मग मी ही करु शकतो, ह्या एटीट्युडने अशा परिस्थीतीला सामोरे जा.

ह्या पुस्तकातल्या ज्या सतरा नियमांनी माझं आयुष्य बदलुन टाकलं, त्यापैकी हे सात नियम! उरलेले दहा नियम पुढच्या लेखात पाठवेन, वाचायला सोपे जावे म्हणून एक हजार शब्दांचे आर्टिकल्स लिहीत आहे,तुमच्या सध्याच्या सांपत्तीक स्थितीवर तुम्ही खुश आहात का? पैसे मिळवण्याचा आतापर्यंतचा तुमचा संघर्ष कसा होता? पैसा तुमचा मित्र आहे का शत्रू? वरील सात नियमांच्या कसोटीवर तुम्ही श्रीमंत आहात की गरीब? मला लिहून पाठवा,हाच आजचा एक्सरसाईज! जितके मन मोकळे कराल, तेवढे स्वतःला समजण्यात तुम्हाला मदत होईल, म्हणून स्वतः:साठी लिहते व्हा!

....

विश्व पर्यावरण

अनुप समुद्रे, परिवीक्षाधीन अधिकारी, आंचलिक कार्यालय पुणे

पर्यावरण क्या हैं?

पर्यावरण दिवस के बारे में जानने से पहले हमें यह पता होना चाहिए कि पर्यावरण क्या है? तो दोस्तों, हमारे आस-पास पास जितनी भी चीजें मौजूद हैं, वह पर्यावरण का ही अंग है. हम मनुष्य, जानवर, पक्षी, पेड़-पौधे भी स्वयं पर्यावरण का ही अंग हैं.

शुद्ध भाषा में कहा जाए तो पर्यावरण पेड़-पौधे, जलवायु , मिट्टी, हवा, पानी जंगल, जमीन, नदियां व पहाड़ इन सब से ही मिलकर बना है और पर्यावरण सीधे-सीधे हमारे दैनिक जीवन से ताल्लुक रखता है. पर्यावरण में लगातार हो रहे बदलाव से मानव जीवन में भी समय-समय पर बदलाव देखने को मिलते हैं.

पर्यावरण खतरे में क्यों है?

पर्यावरण में लगातार बढ़ते प्रदूषण के कारण आज स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई है. जहां भी देखो प्रदूषण का ही बोलबाला है इस प्रदूषण के कारण हमारी पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है जिसकी वजह से ग्लेशियर लगातार पिघल रहे हैं और संकट का कारण बन रहे हैं.

लगातार किसी ना किसी कारणवश पेड़-पौधे काटे जा रहे हैं जिसकी वजह से हमारे पृथ्वी पर ऑक्सीजन की मात्रा बहुत कम हो चुकी है. वास्तव में यही वजह है कि शुद्ध पर्यावरण को इतने नुकसान पहुंचाने के बाद आज हम सभी मनुष्य को कोरोना काल में ऑक्सीजन की कमी के चलते जान गवानी पड़ रही है.

पर्यावरण को बचाना क्यों जरूरी है?

मानव के प्रकृति व पर्यावरण के प्रति दुर्व्यवहार जैसे कि गौ हत्या होना, मांस खाना, पेड़ों की कटाई, अस्वच्छता फैलाना, पेड़-पौधे ना लगाना, कचरा खुले में फेंकना, जल प्रदूषित करना, मना करने पर भी प्लास्टिक की चीजों का इस्तेमाल करते रहने से आज पर्यावरण पूरी तरह प्रदूषित हो चुका है. इन सब दुर्व्यवहारो का ही परिणाम है जंगल में आग लगना, ग्लेशियर पिघल ना, तरह-तरह की बीमारियां फैलना, वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ जाना व ज्वालामुखी विस्फोट होना.

हमें यह बिल्कुल भी नहीं भूलना चाहिए कि हम भी इस पर्यावरण का ही अंग है यदि पर्यावरण प्रदूषित होगा तो इसका असर हम पर सीधे-सीधे होगा और वह दिन दूर नहीं जब हम सबका जीवन समाप्त हो जाएगा इसलिए हमारे लिए पर्यावरण को बचाना बहुत ही ज्यादा जरूरी है अन्यथा इसका परिणाम अत्यन्त विनाशकारी होगा.

प्रस्तावना

दोस्तों, हमारे पर्यावरण पर बढ़ते प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग व पर्यावरण के लगातार शोषण के कारण आज पूरी पृथ्वी समापन की ओर है.

पृथ्वी पर जहां देखो प्रदूषण का बोलबाला है. पर्यावरण प्रदूषण ने केवल मनुष्य को ही नहीं बल्कि पशु-पक्षी तक का जीवन बेहाल कर दिया है. आज इस बढ़ते प्रदूषण के चलते हर तरफ स्थिति ने गंभीर रूप ले लिया है. पर्यावरण की रक्षा हेतु लोगों में जागरूकता फैलाने के लिए विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन प्रतिवर्ष 05 जून को UNEP (United Nations Education Program) द्वारा किया जाता है. इस अवसर का आयोजन लोगों में पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझाने व अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए किया जाता है.

पर्यावरण दिवस की शुरुआत

पर्यावरण दिवस की शुरुआत संयुक्त राष्ट्र सभा द्वारा सन् 1972 में किया गया था जिसमें वर्तमान में 100 से अधिक देश हिस्सा लेते हैं वह जन-जन तक इसकी जागरूकता और प्रोत्साहन फैलाते हैं. पर्यावरण दिवस को हर साल मनाने का निश्चय सन् 1973 में किया गया था. प्रत्येक वर्ष पर्यावरण दिवस के लिए एक टीम चुनी जाती है और उसी के अनुरूप संयुक्त राष्ट्र सभा द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया जाता है. पहला पर्यावरण दिवस 5 जून 1973 को मनाया गया था. इस सकारात्मक सार्वजनिक गतिविधियों वाले कार्यक्रम को सामान्यतः राजनीतिक ध्यान प्राप्त करने के लिए एक प्रभावी वार्षिक अभियान माना गया हैं.

विश्व पर्यावरण दिवस की थीम

विश्व पर्यावरण दिवस के लिए प्रतिवर्ष एक थीम तैयार की जाती है और उसके मुताबिक ही कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. विश्व पर्यावरण दिवस की थीम 2021 के लिए 'इकोसिस्टमरीस्टोरेशन (Ecosystem Restoration)' हैं. इस चुनी गई टीम का अर्थ है पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली करना.

इकोसिस्टमरीस्टोरेशन कैसे संभव है? (Theme Achievement)

प्रतिदिन पेड़-पौधे लगाकर, बारिश के पानी को संरक्षित करके, नदियों को प्रदूषण मुक्त करके, साफ-सफाई रख कर, सरकार द्वारा पर्यावरण बचाव से संबंधित गाइडलाइन को फॉलो करके व प्रदूषण को अपने स्तर पर रोकने के प्रयास से हम अवश्य ही अपने इकोसिस्टम को दोबारा से Restore कर सकते हैं.

विश्व पर्यावरण दिवस पर हम क्या करते हैं?

विश्व पर्यावरण दिवस का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण के शोषण को रोक कर एक स्वच्छ व सफल पर्यावरण का निर्माण करना हैं. इसके लिए पर्यावरण दिवस के दिन लोग एकजुट होकर अपनी प्रमुख वातावरणीय समस्याओं को सुलझाने का संकल्प लेते हैं व पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाते हैं और प्रोत्साहित करते हैं.

आने वाले जीवन व भविष्य को खूबसूरत रंगों से भर देने के लिए इस पर्यावरण को साफ सुथरा होना बहुत जरूरी है. तो इसके लिए पूरी दुनिया भर के अंतरराष्ट्रीय संगठन साथ आते हैं व समस्याओं पर चर्चा करते हैं. स्कूल, कॉलेज व कार्यालयों में भी पर्यावरण दिवस पर लोगों में पर्यावरण के प्रति जोश और उमंग भरने के लिए तरह तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं. अत्यधिक पेड़ लगाने और साफ-सफाई जैसे सामान्य कार्य को लेकर लोगों को प्रोत्साहित किया जाता है.

विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस पर अनेक प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती हैं. इनमें निबंध लेखन, भाषण, नाटक, पैराग्राफ लेखन प्रमुख है. स्कूलों में बच्चों को इस पर रोचक कर दिए जाते हैं जिनसे उनमें प्रकृति के प्रति चेतना बढ़े. इसके साथ ही साथ पर्यावरण से संबंधित प्रतियोगिताएं, सड़क रैलियां, चित्रकला की प्रतियोगिताएं, रीसाइक्लिंग पहल पर्यावरण को कैसे बचाएं पर प्रश्न उत्तर के कार्यक्रम मुख्य रूप से आयोजित किए जाते हैं.इसके अलावा अपने पर्यावरण को कैसे साफ सुथरा रखकर हम इसे और स्वस्थ बना सकते हैं इस पर न्यूज़ में बताया जाता है.
इस प्रकार हमारा ग्रह इस प्रदूषण के चलते बेहाल हो रहा है इस पर भी लोगों का ध्यान खींचा जाता है वह इस समस्या के हल पर चिंतन किया जाता है. इसके साथ ही साथ सरकार द्वारा गाइडलाइन भी जारी की जाती है जिसमें मानव अपने पर्यावरण को कैसे बचा सकता है इस पर विस्तार में विवरण दिया रहता है.

विश्व पर्यावरण दिवस को सफल बनाने के उपाय

प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस मनाना हमारा तभी सफल हो पाएगा जब हमारे पर्यावरण पर ऐसा कोई भी श्राप ना रहे जिससे कि वह विनाश की ओर बढ़े. इसके लिए हम सबको मिलकर पर्यावरण को संरक्षित करना पड़ेगा. यह हमारी पृथ्वी है और इसे हमें ही इसे बचाना है. तो यह हम पर और आप पर ही निर्भर करता है कि हम इससे किस तरह से पेश आते हैं.

पर्यावरण को बचाने के उपाय

1- ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं. प्रतिदिन एक पेड़ लगाने का संकल्प करें.

2- अपने आसपास साफ सफाई रखें. स्वच्छ भारत अभियान का हिस्सा बने.

3- प्लास्टिक को ना कहें. प्लास्टिक के इस्तेमाल को रोकने का प्रयास करें.

4- AC का उपयोग कम से कम करें क्योंकि इससे हमारे पृथ्वी का तापमान बहुत तेजी से बढ़ता है.

5- ज्यादा से ज्यादा वाहन के इस्तेमाल को रोके. पैदल चलने की आदत डालें.

6- नदियों में कूड़ा-कचरा ना फेंके. गंगा हमारी माता है तो उनमें कृपा करके फूल चढ़ावा चढ़ा कर श्रद्धा व्यक्त ना करें.

7- मांस, मुर्गा व जंगली जानवरों का सेवन बिल्कुल भी ना करें.

8- गाय हमारी माता है और एक बहुत ही पवित्र पशु है तो गौ हत्या का विरोध करें.

9- ना गंदगी फैलाएं और दूसरों को भी गंदगी फैलाने से रोके.

10- जल को प्रदूषित ना करें. बारिश के जल को भी संरक्षित करने का प्रयास करें.

निष्कर्ष

पर्यावरण स्वस्थ है तो हम स्वस्थ हैं, हम स्वस्थ हैं तो देश स्वस्थ है और यदि प्रत्येक देश स्वस्थ है तो पूरी पृथ्वी ही स्वस्थ है. इसलिए आज इस पर्यावरण दिवस के उपलक्ष पर हम आपसे विनती करते हैं कि अपनी तरफ से पर्यावरण रक्षा करें और लोगों को भी करने के लिए प्रेरित करें इसी में हम सब की भलाई है.

अंतराष्ट्रीय महिला दिवस – आलेख

संपूर्ण विश्व में **8 मार्च** को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है जिसमें देश, जात-पात, भाषा, राजनीतिक, सांस्कृतिक भेदभाव से परे एकजुट होकर महिला और पुरुष वर्ग इस दिन को महिलाओं के सम्मान में समर्पित करता है. महिला दिवस अब लगभग सभी विकसित, विकासशील देशों में मनाया जाता है.

यह दिन महिलाओं को उनकी क्षमता, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है, जिन्होंने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किए. संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं के समानाधिकार को बढ़ावा और सुरक्षा देने के लिए विश्वभर में कुछ नीतियां, कार्यक्रम और मापदण्ड निर्धारित किए हैं. संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार किसी भी समाज में उपजी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक समस्याओं का निराकरण महिलाओं की साझेदारी के बिना नहीं पाया जा सकता.

भारत में भी महिला दिवस व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है. पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है और समारोह आयोजित किए जाते हैं. महिलाओं के लिए काम कर रही कई संस्थानों जैसे अवेक, सेवा, अस्मिता, स्त्रीजन्म, द्वारा जगह-जगह महिलाओं के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है. समाज, राजनीति, संगीत, फिल्म, साहित्य, शिक्षा क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए महिलाओं को सम्मानित किया जाता है.

भारत में महिलाओं को शिक्षा, वोट देने का अधिकार और मौलिक अधिकार प्राप्त है. धीरे-धीरे परिस्थितियां बदल रही हैं. भारत में आज महिला आर्मी, एयर फोर्स, पुलिस, आईटी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा जैसे क्षेत्र में पुरूषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं. माता-पिता अब बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं समझते हैं.

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है. संस्कृत में एक श्लोक है- 'यस्य पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:. अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं. मां अर्थात माता के रूप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है. बच्चों में संस्कार भरने का काम मां के रूप में नारी द्वारा ही किया जाता है.

यह तो हम सभी बचपन से सुनते चले आ रहे हैं कि बच्चों की प्रथम गुरु मां ही होती है. बेहतर संस्कार देकर बच्चे को समाज में उदाहरण बनाना, नारी ही कर सकती है. अत: नारी सम्माननीय है.

नकदी-रहित अर्थव्यवस्था

वाक्य के शब्दों में कितना विरोधाभास है, लगता है जैसे जल विहीन नदी की बात हो या बारात बिना दूल्हे की स्थिति हो. पर वास्तविकता यह नही है. कैशलेस अर्थव्यवस्था अर्थात ऐसी अर्थव्यवस्था जिसमे नकदी का न्यूनतम प्रयोग हो. सफल कैशलेस इकॉनमी प्रमाणिक एवं जांचा-परखा एक सच है. विकसित राष्ट्रों के विकास का यह प्रमुख मापदंड है. स्वीडेन की अर्थव्यवस्था 97% कैशलेस है अर्थात स्वीडेन में 100 क्रोना के लेनदेन के लिए मात्र 3 क्रोना नकदी का प्रयोग होता है. बेल्जियम की अर्थव्यवस्था 93% , फ़्रांस की 92% , कनाडा की 90% , ब्रिटेन की 89% तथा अमेरिका की 80% कैशलेस है जबकि भारत में यह मात्र 5% है. स्पष्ट है कि भारत में इसके विस्तार की प्रबल आवश्यकता है. कैसलेस इकॉनमी में चोरियाँ एवं भ्रष्टाचार की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है.

आईये देखें कैशलेस अर्थव्यवस्था परिचालित कैसे होती है. इस व्यवस्था में कैश आधारित प्रणाली को डिजिटल पेमेंट मोड पर लाया जाता है. डिजिटल अर्थात अंक आधारित (पिन) इलेक्ट्रानिक भुगतान पद्धति जिसमें क्रेडिट काड्र्स , डेबिट काड्र्स, मोबाइल अथवा औटोमटेड क्लियरिंग हाउस के माध्यम से किए गए भुगतान आते हैं.

भारत में आज 26 करोड़ लोग क्रेडिट काड्र्स , 66 करोड़ लोग डेबिट काड्र्स और लगभग 100 करोड़ लोग मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं , यह संख्या निरंतर बढ़ रही है. यदि लोगो को समुचित प्रशिक्षण दिया जाए और लोग इस वैकल्पिक व्यवस्था जो सरल , सुगम एवं जोखिम रहित है , का अधिकतम उपयोग करें तो कैशलेस इकॉनमी का स्वप्न भारत में भी साकार हो सकता है और हम भी विकास की एक पादान प्राप्त कर लेंगे.

आज हमारे पास निम्न डिजिटल पेमेंट मोड उपलब्ध हैं -

1॰ क्रेडिट / डेबिट / प्री-पेड/ रू-पे काड्र्स एवं पी ओ एस मशीने

छोटे सुविधाजनक प्लास्टिक के काड्र्स जिनके माध्यम से आप गोपनीय डिजिटल पिन का प्रयोग कर के निर्धारित सीमा तक छोटे- बड़े सभी भुगतान कर सकते हैं. व्यापारियों द्वारा इन्हे पी ओ एस मशीनों मे स्वाप कर के भुगतान प्राप्त किया जाता है अर्थात यह दोनों के लिए नकदी रहित लेनदेन का सुगम माध्यम है.

2.इलेक्ट्रानिक बटुआ

यह समान्यतः ई-वैलेट के नाम से प्रचलित है जिसमे आप अपने क्रेडिट काड्र्स एवं खाते का नंबर सुरक्षित रखते हैं , लेनदेन के समय न तो काड्र्स की भौतिक आवश्यकता होती है और न ही आपको इनके नंबर याद रखने की विवशता है. मात्र अपने मोबाइल के माध्यम से आप छोटे लेनदेन कर सकते हैं. एक माह में अधिकतम रु० 20000 तक भुगतान किया जा सकता है. पे-टीएम एवं स्टेट बैंक ई-बडी इसके कुछ उदाहरण हैं.

3 ॰आधार आधारित भुगतान व्यवस्था

आधार संख्या को ही पहचान बना कर खाते में परिचालन किया जाता है. नेशनल पेमेंट कार्पोरेशन आफ इंडिया आधार संख्या से ही गैस सब्सिडि अथवा सरकारी अनुदान इत्यादि आधार एनेब्लेड खातों में जमा करती है.

4॰ यूपीआई

एस एम एस की तरह आसान स्मार्ट फोन के माध्यम से आप अंतर –बैंक निधि स्थानांतरण कर सकते हैं. इसके लिए डेबिट कार्ड का होना आवश्यक है. यह सेवा चौबीसों घंटे उपलब्ध है.

5॰ यूएसएसडी

रु॰ 5000/- तक के छोटे लेनदेन किसी भी मोबाइल फोन से *99# डायल कर के किया जा सकता है. इंटरनेट सुविधा की आवश्यकता नही मात्र आधार संख्या अथवा बैंक के आईएफ़एससी कोड चाहिये. इस पर सेवा प्रभार देय है. यह सेवा भी चौबीसो घंटे उपलब्ध है.

6. मोबाइल बैंकिंग

लगभग सभी बैंकों ने अपने ग्राहकों को यह सुविधा उलब्ध करायी है इसके लिए आवश्यक है कि ग्राहक के मोबाइल नंबर की फीडिंग उसके खाते में हो. इससे आप निधि अंतरण के अलावा फोन रीचार्ज , बिजली बिल भुगतान एवं अन्य बैंकिंग सुविधाएं भी प्राप्त कर सकते हैं.

7. आरटीजीएस एवं एनइएफटी

यह सुविधा नित्य 4.30 साय तक बैंकों में उपलब्ध है. इससे किसी भी राशि तक की निधि का अंतरण किसी भी बैंक खाते मे किया जा सकता है. यह सुविधा सशुल्क है.

कैशलेस लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए सरकार आज उपभोक्ताओं के साथ –साथ व्यापारियों को भी प्रोत्साहन स्वरूप विभिन्न छूट एवं उपहार दे रही है, उनमें से कुछ निम्नवत हैं –

1. क्रेडिट कार्ड से लेनदेन पर मरचेंट डिस्काउंट का भुगतान बैंकों को सरकार द्वारा किया जाएगा.
2. विभिन्न 11 सेवाओं में यदि भुगतान क्रेडिट कार्ड से किया जाता है तो डिस्काउंट उपलब्ध है – जीवन बीमा की किश्त पर 8%, जनरल इन्शुरेंस पर 10%, रेल टिकिट पर 0.50%, पेट्रोलपम्प पर 0.75%, टोल प्लाज़ा पर 10%, रेल कैंटीन मैं 5% तथा रु0 2000/- तक के छोटे लेनदेन पर कोई सेवा प्रभार नही.

सच है कैशलेस बनिये सुरक्षित रहिये.

आज का ग्रामीण जनजीवन और परिवेश

आज का ग्रामीण समाज और कल का बीता हुआ ग्रामीण समाज दोनों की परिभाषा की जाए तो बहुत ही अंतर होगा इन दोनों की परिभाषाये एक दूसरे से मिली जुली हो सकती है परन्तु एक जैसी नहीं भारत कृषि प्रधान देश है गांवो का देश है लेकिन क्या किसान जीवित है गांव जीवित है शायद नहीं जो गांव हम चाहते है वो नहीं लोगो के बोलने का अंदाज वो मीठी बोली, भाईचारा और एक दूसरे के प्रति प्रेम अब गांवों भी कम ही देखने को मिलता है. लेकिन श्रम का महत्व तो आज भी गांवो में ही देखने को मिलता है श्रम की अपार सीमा वही देखने को मिलती है. आज विलासिता भरा जीवन और सारी सुख सुविधा पाने की इच्छा ने लोगो को केवल आत्मकेंद्रित कर दिया है, वह स्वार्थी होता जा रहा है. शहर की बात ही छोड़ दे वो तो फ़ास्ट ट्रैक या बिजी लाइफ कहकर अपने आप को बचा लेता है लेकिन आज के ग्रामीण जीवन में भी ये बातें दिखायी देने लगी है. जब पहले घर में मेहमान आते थे तो भले ही गुड़ और शरबत से उसका स्वागत किया जाता था लेकिन मन में उसके प्रति आदर और प्रेम अपार ख़ुशी लोगो के चेहरे से झलकती थी परन्तु आज गांवों में भी लोगो के मन में प्यार और आदर भावना कम होती जा रही है.

मेरा अनुभव यही कहता है कि ये सब पहले न था परन्तु आज हालात कुछ और है. गांव अब शहरो में तब्दील होते जा रहे है खेतो की परम्परा नष्ट होती जा रही है, लोग अपने खेत किराए पर दे रहे है. किसान घर बैठकर बस किराए के भरोसे बैठा रहता है, गांव शहर की ओर बढ़ रहा है और गांव के लोग शहर की ओर पलायन कर रहे है, इसका क्या कारण हो सकता है ? मन में ठसक सी लगती है कि हमारी पहचान कृषि और खेतों लहलहाते फसलों से है. हमारी प्रकृति से है लेकिन ये सब धीरे- धीरे नष्ट होता जा रहा है.

ग्रामीण जीवन और परिवेश भी बदलता जा रहा है, उसका रूप भी बदलता जा रहा है. सिक्के के हमेशा दो पहलु होते है, एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक. लेकिन केवल सकारात्मक पर विचार करें तो भारत विकसित हो रहा है, नए युग की ओर बढ़ रहा है विकसित देशों की बराबरी कर रहा है. यह सब सही है, लेकिन इसका दूसरा पहलु भी है जिसे नजर अंदाज नहीं किया जा सकता क्यूंकि उन पहलुओ में भारत की वह तस्वीर है जो सच्चाइयां उजागर करती है. वह तस्वीर आज के समाज की, लोगो की और आज के परिवेश की है. भारत में महानगरों को शिखर की ओर ले जाने वाला कहीं न कहीं भारत का गांव है. लेकिन उसे नजर अंदाज कर दिया जा रहा है, किसान को उसकी मेहनत का फल नहीं मिल रहा है, और वो आत्महत्या तक कर रहा है लेकिन इसका जिम्मेदार कौन ? शायद पूरी व्यवस्था. इन्ही सब कारणो से लोगो का लगाव, एक दूसरे के प्रति प्रेम खत्म होता जा रहा है. ये बड़ी दयनीय और विचारणीय स्थिति है , गांवों से संस्कृति और हमारे भारतीय होने की पहचान मिलती है. ये सत्य है, कि हम अपनी पहचान धीरे–धीरे खो रहे है. कहते है सुख और चैन केवल गांवों में है.

लेकिन क्या सच में आज भी गांवों में पहले जैसा सुख और चैन है ? वहां का वातावरण कल की तरह स्वच्छ है अगर सही कहूँ तो नहीं क्यूंकि वातावरण तो गांवो का भी प्रदूषित हो चुका है और सुख की नींद शायद ही अब गांव के लोगो को आती है. लेकिन क्या सच में वहां के लोगो को भी वही अनुभूति होती है ? जो हमें होती है. वहां जाकर जब हमें ही नहीं होती तो वे तो उसी परिवेश में रहते है तो उनकी क्या मनस्थिति होती होगी इस पर विचार करना बहुत आवश्यक है. क्यों आज गांव में वो बात नहीं जो पहले थी अच्छी बात है आज गांवों की लड़कियां भी शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ रही है. लेकिन आज भी वहां ऊँच–नीच, छुआछूत है और मैंने देखा है, महसूस किया है इनके इन बुराइयों की जड़ों को कैसे नष्ट किया जाए और आज गांवों के लोगो में नकारात्मक सोच ने गहरा प्रभाव कर लिया. दहेज़ प्रथा कहीं न कहीं इन्हे आज भी सताती है. आज भी पर्दा प्रथा है, खत्म नहीं हुई है. ये सारे दोष है और जो गुण थे वो ख़त्म होते जा रहे है और दोष जो थे वो न कम हुए और न ही ख़त्म हो रहे है.

हमें भारत को बचाना है तो गांवों को बचाना होगा उनकी तरक्की भी जरुरी है लेकिन उनके वास्तिविक रूप को मिटाकर नहीं तरक्की उनके असलियत के साथ उनके यथार्थ को उसी रूप में बनाये रखने के साथ क्यूंकि ये तरक्की कहिं न कहिं हमें विफलताओ का दर्शन करा सकती है. भारत की एकता को हमे बनाये रखना है हमें अपने अस्तिव को बनाये रखना है इसके लिए जरुरी है हम ग्रामीण संस्कृतयो और सभ्यताओ को अधिक से अधिक महत्तव दे और उनके बारे में थोड़ा विचार करे या उनके द्वारा हम अपना ही विचार कहीं न कहीं करेंगे.

सरकार की कई सारी योजनाये है, लेकिन क्या सच में उनका लाभ गांवों के लोगो को मिलता है कितना संतुष्ट है गांवों के लोग क्या कभी हमने उनके बारे में सोचा शायद नहीं क्यूंकि हम आधुनिक युग के है न तो शायद फ़ास्ट ट्रैक लाइफ में समय ही नहीं मिला होगा. लेकिन अब हमें समय निकालना होगा गांवों की बुराइयों को मिटाना होगा हमें उनका साथी बनकर उनकी मदद करनी होगी. सरकार को और सजग होना होगा और हमें उन लोगो को जागरूक बनाना होगा तभी जाकर हमारा और आपका सपना साकार और सच या कह ले सार्थक होगा.

गांवो की भाषा परिवेश का समाज हमें इन सभी मुद्दो पर मिलकर एक साथ काम करना होगा. अपने भारत की रौनक को बनाये रखना होगा क्यूंकि हमारी रौनक हमारे समाज और हमारे देश के गौरव में है. और हमारे देश का गौरव हमारी संस्कृति से है और हमारी संस्कृति गावो में निवास करती है. हमें अपनी संस्कृति को एक सुन्दर और सफलता से परिपूर्ण माहौल देना होगा जो गांवों को आगे ले जाने से और हमारे जागरूक होने से साथ ही व्यवस्था को बदलकर नयी व्यवस्था की मांग के साथ सरकार का ध्यान अपनी ओर केंद्रित करके होगा तथा हमे अपने आप को सोने की चिड़िया फिर बनाना है और यह तभी सम्भव होगा जब पहले हम सोने के हो जाए.

हमारी संस्कृति हमारी पहचान हमारा गौरव है. हमें अपने गौरव को बनाये रखना है और हमें उसके लिए हमेशा तत्पर रहना होगा एक सकारात्मक सोच के साथ उम्मीद की नयी किरण के साथ.

मेरे जीवन की सीख (एक संस्मरण)

क्रोध मनुष्य के मन एवं दिमाग का भयंकर भाव है. जिस प्रकार प्रत्येक सिक्के के दो पहेलू होते है, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक प्रकार के भाव एवं वस्तु के भी दो पहेलू होते है, हानि एवं लाभ अथवा अच्छा एवं बुरा, परंतु क्रोध का ऐसा भाव है, जिसमे केवल हानी होती है. क्रोध आने पर कोई भी इंसान अपने आप पर संयम रखने मे असमर्थ हो जाता है. क्रोध आने पर इंसान कोई भी ऐसा कार्य कर देता है अथवा ऐसा कुछ बोल देता है जिसका बाद मे उसे पश्चाताप होता है.

मेरे पिता जी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ, बात कई साल पुरानी है, जब मेरे पिताजी की नई-नई नौकरी बैंक में लगी थी. उनकी नई -2 नियुक्ती उत्तरप्रदेश की एक छोटी सी शाखा बस्ती मे हुई थी. वहा विधुत आपूर्ति बाधित होने पर जेनेरटर की सुविधा भी नहीं थी, अतः पेट्रोमेक्स की गर्मी मे कैश काउंटर पर बेठना असहनीय हो रहा था. माह के आरंभ के दिन होने के कारण पेंशन धारको की भीड़ थी. वे भुगतान के लिए टोकन की संख्या के हिसाब से ग्राहको को बुला रहे थे. उन्होने एक टोकन नंबर की आवाज लगाई, उत्तर मे आवाज आई " आ रहा हूँ सर " और ठक-2 की आवाज आने लगी किन्तु भुगतान लेने कोई नहीं आया. उन्होने पुनः आवाज लगाई, उत्तर मे वही शब्द सुनाई दिये, ठक-2 की आवाज अभी भी आ रही थी. किन्तु भुगतान लेने अब भी कोई नहीं आया. काउंटर पर भीड़ बढ़ती जा रही थी साथ मे गर्मी भी अधिक थी और जिन्हे वे बुला रहे थे वे आ नहीं रहे थे. खीझ मे उनके मूख से निकला " इतनी देर मे तो बिना पैर वाले भी आ जाते ".

तभी भुगतान लेने हेतु संबन्धित सज्जन आए उन्हे चेहरे से वे जानते थे. वे रेल्वे के कर्मचारी थे तथा उनकी शाखा मे हमेशा आते थे. पर उनमे कोई शारीरिक कमी नहीं थी किन्तु उस समय वे वैशाखी का सहारा लिए हुये थे. पिता जी तुरंत अपनी कुर्सी से खडे हो गये. उनकी नज़र सज्जन के पैरोपर पड़ी, वे स्तब्ध रह गये. उनका एक पैर नहीं था. पिताजी कहते है की उस समय उनकी जिह्वा तालू से सट गई, उन्हे अपने कहे शब्द याद आये, " इतनी देर मे तो बिना पैर वाले भी आ जाते ". उनके हाथ स्वयं जुड़ गए, उन्होने अपने कहे शब्दो पर पश्चाताप व्यक्त करते हुये माफी मागी और कहा की "मुझे बिल्कुल अनुमान नहीं था की आप ऐसी स्थिति मे है".

उन्होने पुनः क्षमा याचना करते हुये उनकी वर्तमान शारीरिक अक्षमता का कारण पूछा. सज्जन ने बताया की कार्य निर्वहन के क्रम मे ट्रेन से उनका पैर कट गया. पिता जी को खुद की विवेक हीनता पर क्रोध आया किन्तु " बंदूक से निकली गोली तथा जुबान से निकली हुई बोली कभी वापस नहीं आ सकती, अतः विवश थे. उन्होने तुरंत उनकी अपेक्षित राशि लेकर, काउंटर बंद कर उनके पास गये, उन्हे सहारा देते हुये कुर्सी पर बिठाते हुये उन्हे उनकी राशि दी तथा अनजाने मे हुई गलती के लिए पुनः क्षमा याचना की. उनकी बार-बार की क्षमा याचना से वे भी भावुक हो गए तथा भविष्य मे जब भी किसी कार्य से शाखा आते, पिताजी को ही खोजते.

पिताजी ने अपना यह संस्मरण मेरे साथ साझा किया. इस घटना ने मुझे सीख भी दी और मैंने जान लिया सफलता का रहस्य

" अपने काम से प्रेम करो, अपने सपनों पर विश्वास रखो,

धरती पर नहीं ऐसी कोई शक्ति, जो तोड़ सके तुम्हारे सपनों को"

मैंने भी जीने का रहस्य जान लिया की दूसरों को प्रेम करो और किसी का दिल मत दुखाओ.

मेरा स्कूल – एक कविता

ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना

कमीज के बटन ऊपर नीचे लगाना
वो अपने बाल खुद न काढ पाना
पी टी शूज को चाक से चमकाना
वो काले जूतों को पैंट से पोछते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो बड़े नाखुनो को दांतों से चबाना
और लेट आने पे मैदान का चक्कर लगाना
वो प्रेयर के समय क्लास में ही रुक जाना
पकडे जाने पे पेट दर्द का बहाना बनाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो टिन के डिब्बे को फ़ुटबाल बनाना
ठोकर मार मार उसे घर तक ले जाना
साथी के बैठने से पहले बेंच सरकाना
और उसके गिरने पे जोर से खिलखिलाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

गुस्से में एक-दूसरे की कमीज पे स्याही छिड़काना
वो लीक करते पेन को बालो से पोछते जाना
बाथरूम में सुतली बम पे अगरबती लगाकर छुपाना
और उसके फटने पे कितना मासूम बन जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो गेम्स पीरियड के लिए सर को पटाना
यूनिट टेस्ट को टालने के लिए उनसे गिडगिडाना
जाड़ो में बाहर धूप में क्लास लगवाना
और उनसे घर-परिवार की बातें सुनते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो बेर वाली के बेर चुपके से चुराना
लाल–काला चूरन खाकर एक दूसरे को जीभ दिखाना
जलजीरा, इमली देख जमकर लार टपकाना
साथी से आइसक्रीम खिलाने की मिन्नतें करते जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो लंच से पहले ही टिफ़िन चट कर जाना
अचार की खुशबू पूरे क्लास में फैलाना
वो पानी पीने में जमकर देर लगाना
बाथरूम में लिखे शब्दों को बार-बार पढके सुनाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो एक्जाम से पहले गुरूजी के चक्कर लगाना
बार–बार बस इंपोर्टेण्ट पूछते जाना
वो उनका पूरी किताब में निशान लगवाना
और हमारा पूरे कोर्स को देख चकराना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो फेरवेल पार्टी के दिन पेस्ट्री समोसे खाना
और जूनियर लड़के का ब्रेक डांस दिखाना
वो टाइटल मिलने पे हमारा तिलमिलाना
वो साइंस वाली मैडम पे लट्टू हो जाना
ऐ मेरे स्कूल मुझे जरा फिर से तो बुलाना...

वो मेरे स्कूल का मुझे यहाँ तक पहुचाना
और मेरा खुद में खो उसको भूल जाना
मेरा बाजार में किसी परिचित से टकराना
वो जवान गुरूजी का बूढ़ा चेहरा सामने आना...
तुम सब अपने स्कूल एक बार जरुर जाना.....

पुणे अंचल द्वारा हिन्दी कार्यशाला का सफल आयोजन- एक रिपोर्ट

दिनांक 19.06.2021 को **पुणे और नागपुर ज्ञानार्जन एवं विकास केन्द्रों के माध्यम से गूगल मीट प्लेटफार्म पर** आंचलिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 45 से अधिक कार्मिकों ने उत्साह के साथ सहभागिता की. इस कार्यशाला में प्रमुख रूप से 'राजभाषा नीति की आवश्यकता और भारतीय संविधान में प्रावधान, राजभाषा संबंधी विविध विवरणियां तैयार करना आंतरिक कामकाज में हिन्दी का प्रयोग, व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं जॉच तथा उनका प्रेषण करना तथा अंत में यूनीकोड की उपयोगिता तथा कम्प्यूटर पर हिंदी में टायपिंग करना' जैसे सामयिक विषयों को सम्मिलित किया गया

आंचलिक कार्यालय के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजीव तिवारी द्वारा **राजभाषा नीति की आवश्यकता और भारतीय संविधान में प्रावधान** विषय पर अपने विचार प्रकट किए. इस संबंध में उन्होने आत्मनिर्भर भारत अभियान में डिजिटल संसाधनों के विकास पर प्रकाश डाला तथा यह भी बताया कि केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय ने विविध सरकारी कार्यक्रमों जैसे दीक्षा, स्वयं, स्वयं प्रभा, शिक्षा वाणी, साईन लैग्वेंज आदि सरकारी कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा की पहुंच को सहज और सशक्त किया है.

इसी प्रकार बैंकों में ऑनलाईन/डिजिटल बैंकिंग के जरिए ग्राहकों को घर बैठे बैंकिंग सुविधाएं प्रदान किए जाने की सुविधाओं पर चर्चा की गई. बैंक के मोबाईल एप्प के प्रयोग के विषय में भी ज्ञानवर्द्धन किया गया. शाखाओं में हिन्दी के प्रयोग को सुनिश्चित करने के लिए आसान टिप्स दी गई तथा राजभाषा निरीक्षणों के दौरान जांच की जाने वाली विविध मदों पर जानकारी दी गई.

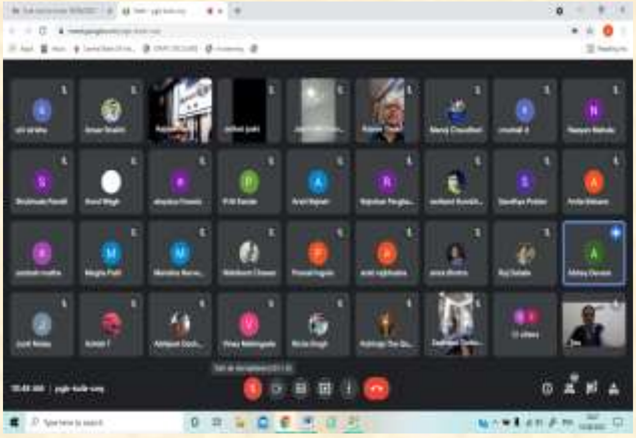

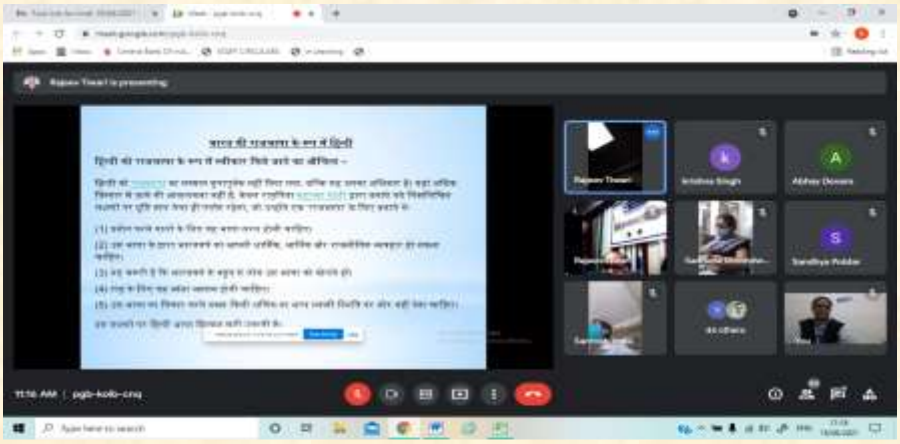

राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2021-22 के लिए निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं	मद		भाषिक क्षेत्र "क"	भाषिक क्षेत्र "ख"	भाषिक क्षेत्र "ग"
1	**हिन्दी में मूल पत्राचार** (तार, बेतार, टेलेक्स, फैक्स, आरेख, ई-मेल आदि सहित)	"क" क्षेत्र से	100%	100%	65%
		"ख" क्षेत्र से	90%	90%	55%
		"ग" क्षेत्र से	55%	55%	55%
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना			-- 100% --	
3	हिंदी में टिप्पण		75%	50%	30%
4	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम		70%	60%	30%
5	हिंदी टंकक, आशुलिपिक की भर्ती		80%	70%	40%
6	हिंदी में डिक्टेशन		65%	55%	30%
7	हिन्दी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)		100%	100%	100%
8	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना		100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ ग्रंथों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजीटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/डीवीडी, पेन ड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय		50%	50%	50%
10	बैंकों के ऐसे अनुभाग जहां समस्त कार्य हिन्दी में हो		40%	30%	20%
11	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद				-- 100% --
12	बैबसाइट (द्विभाषी)				--100%--
13	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन (द्विभाषी)				-- 100% --
14	कोड, मैनुअल, फार्म, प्रक्रिया साहित्य का हिन्दी अनुवाद				-- 100% --
15	विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर एवं मुख्यालय में स्थित अनुभाग/ कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)		25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
16	**राजभाषा संबंधी बैठकें**	हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 02 बैठकें (न्यूनतम)	
		नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)	
		राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 04 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	

विजेता वे नहीं,
जो कभी हारे नहीं!
बल्कि वे हैं,
जो कभी पीछे हटे नहीं!!